Finish 190 x 260 mm

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• सितम्बर २०१९ • वर्ष ७० • अंक ०९
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

महामनीषी, स्वतंत्रता सेनानी, प्रखर चिंतक, प्रबुद्ध दार्शनिक, राजस्थानी एवं हिंदी भाषाओं के विश्वप्रसिद्ध महाकवि सेठियाजी की जन्मशती पर सादर समर्पित

पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया परिशिष्टांक

जन्म: ११ सितम्बर १९१९ ई.
निधन: ११ नवम्बर २००८ ई.

१५ सितम्बर २०१९ को पवनपुत्र बैंक्वेट हॉल, काकुड़गाछी, कोलकाता में पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में आयोजित सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक का दीप-प्रज्ज्वलन कर शुभारम्भ करते राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ; चित्र में (बायें से) पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण श्री रामअवतार पोद्दार एवं डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर अग्रवाल, श्री संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गोवर्धन गाड़ोदिया एवं राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका।

इस अंक में –

- अध्यक्षीय : समाज शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सेवा के लिए समाज आगे आये!
- सम्पादकीय : मायड़ भासा रे बिन्या, क्या रो राजस्थान
- रपट : अखिल भारतीय समिति की बैठक, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक, संगोष्ठियों का आयोजन, प्रादेशिक सम्मेलनों की गतिविधियाँ
- पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया की जन्मशती पर विशेष परिशिष्ट
- सम्मेलन में नये सदस्यों का स्वागत

दीपावली की हार्दिक मंगलकामनायें!

LINC
Think it. Linc it.
pentonic
born
of
black
pentonic™
Write the future
Begin a statement that moves the nation.
Gift tomorrow's generation a new set
of words to remember.
Start an idea that inspires and
challenges the future.
Emerge with the boldness of black.
₹10 per U

RUPA
FRONTLINE
PREMIUM INNERWEAR
INDIA'S FIRST
ANTI BACTERIAL
PERFUMED VEST
PRODUCT CODE
HUNK Vest
#72P
बैक्टीरिया रोधक
सुगंधित बनियान
PERFUMED VEST
TREATED IN ANTIBACTERIAL MICRO CAPSULE
HIGH QUALITY COTTON FIBRE
ये आराम का मामला है!
www.rupa.co.in | Toll-Free No.: 1800 1235 001 | www.rupaonlinestore.com

With Best Compliments From:

ROAD CARGO MOVERS PVT. LTD.

Head Office : 3, Gibson Lane, 2nd Floor
Suite-211, Kolkata-700 069

Phone : 2210-3480, 2210-3485

Fax : 2231-9221

E-mail: roadcargo@vsnl.net

Branches & Associates:

GUWAHATI, SILIGURI, DURGAPUR, HALDIA, KHARAGPUR,
BALASORE, BHUBNESWAR, CUTTUCK, ICCAPURAM, VISHAKAPATNAM,
VIJAYWADA, HYDERABAD, CHENNAI, BANGALORE, COCHIN, GAZIABAD (U.P. BORDER), INDORE

समाज विकास

◆ सितम्बर २०१९ ◆ वर्ष ७० ◆ अंक ०९
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक — पृष्ठ संख्या

- **सम्पादकीय : शिव कुमार लोहिया** ७
  मायड़ भासा रे बिन्या, क्या रो राजस्थान
- **अध्यक्षीय : सन्तोष सराफ** ९
  समाज शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सेवा के लिए समाज आगे आये!
- **रपट –**
  अखिल भारतीय समिति की बैठक १०
  राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक १५
- **समाचार सार** १७
- **संगोष्ठी** – मित्रता दोस्ती - एक बातचीत २१
  – मारवाड़ी की साख - उसकी पहचान २२
- **प्रांतीय समाचार** २४
- **पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया परिशिष्टांक** २९-४३
- **देव-स्तुति : डॉ. जुगल किशोर सराफ** ४४
- सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत ४५-४७

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं सम्पर्क कार्यालय : **४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७**
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

पंजीकृत कार्यालय : १५२बी (द्वितीय तल), महात्मा गांधी रोड कोलकाता - ७००००७

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिये **श्री भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ सम्पादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

दीपावली प्रीति मिलन समारोह

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभी सदस्यों के सादर ध्यानार्थ

महोदया / महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का दीपावली प्रीति मिलन समारोह आगामी ०९ नवम्बर २०१९ (शनिवार) को अपराह्न ४ बजे से, ४०, आयरन साईड रोड, कोलकाता में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ के सभापतित्व में आयोजित किया गया है। समारोह का आतिथ्य सम्मेलन के विशिष्ट संरक्षक, समाजसेवी श्री आनन्द अग्रवाल करेंगे।

समारोह में आपकी सपरिवार-सबान्धव उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

– श्रीगोपाल झुनझुनवाला
राष्ट्रीय महामंत्री

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
4बी, डकबैक हाउस (चौथा तल्ला)
41, शेक्सपियर सारणी, कोलकाता-700 017

समाज से सादर निवेदन

वैवाहिक अवसर पर मद्यपान करना - कराना धार्मिक एवं सामाजिक दोनों रूप से उचित नहीं है।

प्री-वेडिंग शूट
हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के खिलाफ है।

समाजहित में इनसे परहेज करें।

निमंत्रण में ई-कार्ड को बढ़ावा दें।

IISD Edu World
Be a Leader...

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically" — Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100% Quality Education at most affordable fees

Hospitality

Hospitality Management & Culinary Arts

Newly Introduced

BTED – HND in Hospitality Management

awarded by EDEXCEL, UK (A Pearson Global Education Undertaking)

Language School

- Functional English
- Spanish
- Russian
- Chinese
- French
- Hindi
- SANSKRIT
- Spoken English
- Italian
- German
- Persian
- Bahasa (Indonesia)
- Bengali

Assistance for placement

- Complementary Spoken English
- Online Application Facility
- Regular/Weekend Classes
- AC Classrooms
- P G Accommodation

Centre for Administrative Services / WBCS

Course Director: Dr.Bikram Sarkar (IAS retd.)

- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)

Health Care

Preparatory course for Joint Entrance of MD/MS, DNB and MRCP (Part-I) Medicine

"Family Medicine Certificate Course (First Aid)

Business School

- AIMA recognized PGDM (2Yrs.)
- Tally ERP 9+GST
- Company Secretaryship
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance

Skills

- Web Technology
- Certificate course on Theology
- Soft Skills
- Vocational & Technical Training
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Certificate Course on Computer Applications
- School Guide
- Bachelor Guide

IISD EDU World

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in ● Website : www.iisdedu.in

18, Ballygunge Circular Road, Kolkata-700019
Website : www.iisdeduworld.com
Email : iisdedu@gmail.com
Ph : 46001626 / 27

सम्पादकीय

'मायड़ भासा रे बिन्या, क्या रो राजस्थान'

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के जन्मशती के अवसर पर उनकी विलक्षण साहित्यिक यात्रा के साथ-साथ राजस्थान एवं राजस्थानी भाषा के प्रति उनका समर्पण अनायास ही स्मरण हो जाता है। इन्होंने कहा था –

निज भासा साहित्य बिन, पनपै कदै न प्रांत
सभ्य स्वतंत्र समाज रो सदा अमर सिंद्धात

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा था – "राजस्थान ने अपने रक्त से जो साहित्य-निर्माण किया है उसकी जोड़ का साहित्य और कहीं नहीं पाया जाता। उनका कहना है कि राजस्थानी कवियों ने कठिन सत्य के बीच मे रहकर युद्ध के नगाड़े के मध्य कवितायें लिखी थी। युद्ध का तांडव रूप उनके सामने था। राजस्थानी भाषा के साहित्य में जो एक भाव है, उद्वेग है, वह केवल राजस्थान के लिये नहीं वल्कि सारे भारत के लिये गौरव की बात है।" यह कल्पना का विषय है कि सेठिया जी की रचनाओं के विषय में टैगोर की क्या राय होती। सेठियाजी को राजस्थान का टैगोर कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अमर होने के लिए बहुत अधिक लिखना आवश्यक नहीं! श्री बंकिम चन्द्र चटर्जी को मात्र 'वंदे मातरम' गीत एवं इकवाल को 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान' गीत ने अमर कर दिया। असम के लोकप्रिय कवि एवं गायक भूपेन हजारिका की रचना 'विस्तार है अपार, प्रजा दोनों पार, निःशब्द सदा, ओ गंगा तुम, ओ गंगा बहती है क्यों?' गीत हर देशवासी के जुबान पर चढ़ गया। सेठियाजी का गीत 'धरती धोरां री' ही काफी हैं उन्हें अमर करने के लिए। यह गीत राजस्थान के लिए राष्ट्रगान का रूप ले चुका है। 'धरती धोरां री' के साथ 'पातळ'र पीथल' मरुभूमि के दुरूह जीवन, राजपुताने के शौर्य एवं बलिदान, वहाँ के कण-कण में बिखरे सौरभ की प्रखर रचना है। सेठियाजी की रचना मूल्यबोध, दर्शन एवं आध्यात्म से परिपूर्ण है। उनका दर्शन जीवन को स्पर्श करता है एवं उनकी रचनाओं को अप्रतिम ऊँचाई प्रदान करता है। राजस्थान की धरती का गुण-गाण करने वाले युगद्रष्टा कवि की माटी पर रचना है –

कोनी / माटी स्यूं
मोटी / कोई साच
सगळा / तत
माटी रे पाण / सत

गागर में सागर भरती हुई उनकी छोटी-छाटी रचनाओं में गहराई विस्मृत कर देती है –

बनता
बीज गल फल
जल सूख बादल
दीप बूझ काजल
तल डूब अतल
आज मिट कल

एक अन्य रचना में पूरब-पश्चिम के सोच को उकेरा है–

पिच्छम की जिनगानी
सासतो भाजणै री एक होड़,
पूरब री
थम'र सोचणै री एक मोड़
अतैक फरक स्यूं
पिच्छम मे जलमै युद्ध
पूरब मे बुद्ध।

सेठियाजी आजीवन सामाजिक सुधार, लोकसेवा, साहित्य-संरचना, काव्य-रचना के प्रति समर्पित रहे। उनकी रचनाओं में दलितोत्थान की एक झलक –

कुण जमीण रो धणी
हाड मास चाम गाळ
खेत मे पसेव सींच
लू लपट ढंड मेह
सै सवै दांत भीच
फाड चौक कर करै
करै जोतणी'र बोवणी
वो जमीन रो धनी क
ओ जमीण रो धनी?

राजस्थानी भाषा एवं उसकी मान्यता के लिये उन्होंने बहुत कुछ किया। भाषा के प्रति राजस्थानियों की उदासीनता के विषय में उन्होंने कहा था –

मायड़ भासा बोलता जिण नै आवे लाज
इस्या कपूत सै दुःखी आखो देस समाज

उनके जन्मशती के अवसर पर राजस्थानी भाषा पर चर्चा करना समीचीन होगा। राजस्थानी भाषा का पहला लिखित साहित्य तेरह सौ साल पहले 'कुवलयमाला' के नाम से प्रकाशित हुआ था। मारवाड़ी क्षेत्र के प्रतिष्ठित नगर भीनमाल के सद्योदन सुरी ने इसकी रचना की थी। इसमें

कुछ गुजराती का पुट था। इसमें राजस्थानी भाषा की प्रमुख उपभाषा मारवाड़ी का सर्वाधिक प्रयोग हुआ था। राजस्थानी भाषा की दूसरी प्रमुख साहित्यिक रचना 'पृथ्वीराज रासो' थी। लेखक चन्द बरदाई ने राजस्थानी भाषा का प्रयोग किया था। बाद में उसे हिन्दी की उपभाषा के रूप में माना गया। भक्तिकाल में मीरा पदावली और वेलि क्रिसन रुकमणी राजस्थानी भाषा साहित्य के पक्ष में अकाट्य प्रमाण है। डॉ. एल. पी. तैस्सीतोरी ने राजस्थानी भाषा-साहित्य के विषय में बहुत कार्य किया। सेंटर फार राजस्थान स्टडीज के आँकड़ों के अनुसार राजस्थानी भाषा आठ करोड़ से ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाती है। इसकी बोलियाँ हैं – मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाडौती, बागड़ी, धुंधाड़ी, मेवानी, शेखवाटी, बागड़ी। राजस्थानी भाषाविद डॉ. लखन गुसाई के अनुसार अगर उसकी सभी बोलियों का मिलान किया जाय तो शब्दों मे ज्यादा फर्क नहीं मिलेगा। थोडा सा अक्षर या मात्रा का बदलाव ही शब्द को अलग बनाता है। डॉ. गुसाई के अनुसार जो राजस्थानी भाषा मौजूद है उसमें अस्सी प्रतिशत योगदान उसकी उपभाषा मारवाड़ी का है। इसी कारण पूर्वी राजस्थान में वृजबोली से प्रभावित क्षेत्र के कुछ लोग राजस्थानी के नाम पर मारवाड़ी थोपने का आरोप लगा रहे हैं। भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि राजस्थानी हिन्दी से नहीं निकली बल्कि स्वतंत्र अस्तित्व वाली भाषा है। राजस्थान राज्य आदि लेखकार के रिकार्ड से इन तथ्यों की पुष्टि होती है कि रजवाड़ों के समय राजकाज, शिक्षा, हुंडी, पट्टे-परवाने और अन्य कार्य राजस्थानी भाषा में ही होते थे। रजवाड़ों का यह स्थान भाषा के कारण ही राजस्थान कहलाया। भाषाकारों का कहना है कि बोलियाँ भाषा के अंग-स्वरूप होती हैं। सभी भाषाओं में बोलियाँ होती हैं।

राजस्थानी भाषा आज सम्पूर्ण भाषा है एवं वैज्ञानिक आधार पर उसे मान्यता मिलनी चाहिए। अमेरिका के ज्यादातर विश्वविद्यालयों में राजस्थानी भाषा तीसरी भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है। अमरीका की लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस ने राजस्थानी को तेरह समृद्धतम भाषाओं की सूची में रखते हुए 'धरती धोरां री' के रचयिता कवि कन्हैयालाल सेठिया की रचनाओं की उनके ही स्वर में रिकार्डिंग की थी। गत ३० वर्षों से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तक राजस्थान में स्थित विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल है। यूजीसी राजस्थानी विषय में वर्ष में दो बार नेट जे.आर.एफ की परीक्षायें करवाता है और फेलोशिप प्रदान करता है। राज्य के बीएड पाठ्यक्रमों में राजस्थानी एक शिक्षण विषय के रूप में शामिल है। अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों एवं ब्रिटेन के केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी सहित देश-विदेश के कई विश्वविद्यालयों में यह शोध व शिक्षण के विषय के रूप में मान्य है। इसके अंतर्गत हजारों शोध हो चुके हैं एवं अभी जारी हैं। एन.सी.इ.आर.टी. ने उसे मातृ-भाषाओं की सूची में शामिल किया है। केन्द्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने भी १९७४ से इस भाषा को मान्यता प्रदान कर रखी है, तथा प्रति वर्ष राजस्थानी साहित्यकारों एवं अनुवादकों को पुरस्कृत करती है। राजस्थानी लोकसेवा आयोग, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ ईंडिया, आकाशवाणी, दूरदर्शन राजस्थानी को सम्पूर्ण भाषा मानकर व्यवहार में ले रहे हैं। राजस्थानी भाषा का समृद्ध साहित्य है एवं हजारों साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से इस भाषा को समृद्ध किये जा रहे हैं।

मान्यता के अभाव में बच्चों को अपनी मातृभाषा की जगह हिन्दी-अंग्रेजी में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हो रही है। मान्यता होने पर रोजगार के लिये प्रतियोगिताओं में विषय के रूप में शामिल हो सकती है, जिससे राजस्थान के अभ्यर्थियों के चयन के अवसर बढ़ जायेंगे। विधानसभा एवं संसद में राजस्थानी भाषा में शपथ एवं वक्तव्य क्रमशः लिये एवं दिये जा सकेंगे। निर्वाचित प्रतिनिधि अपनी भाषा में अपनी बात अच्छी तरह से रख पायेंगे। रवीन्द्रनाथ टैगोर, पं. मदन मोहन मालवीय, जार्ज अब्राहम गियर्सन, डॉ. एल.पी. तैस्सीतोरी, डाः सुनीति कुमार चटुर्जी, राहुल सांकृत्यायन, भांवेर चंद मेधावी, काका कालेलकर जैसे विद्वान राजस्थान को स्वतंत्र एवं बड़े समुदाय की स्वतंत्र भाषा मानते रहे हैं।

कन्हैयालालजी सेठिया की जन्मशती पर राजस्थानी भाषा को सांवैधानिक मान्यता के लिये सम्पूर्ण प्रयास करना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आजीवन उन्होंने इस दिशा में प्रयास किया। उनकी रचनाओं में उनकी पीड़ा व तड़प साफ झलकती है। उन्होंने कहा था – **बिन भाषा बिन पानी, बिलखै राजस्थानी**। उन्होंने कहा था – राजस्थानी भाषा जिकी १५ करोड़ (७ करोड़ प्रवासी) लोगा री भाषा है, भारत रै संविधान में मान्यता नही दैवनों, संविधान री घोर अवमानना है। प्रजातांत्रिक संविधान में संविधान री जड़ पर कुठाराघात करिजौ गयो है। राजस्थान विधान सभा नै सर्वसम्मत संकल्प (प्रस्ताव) सै पारित कर'र केन्द्रीय सरकार नै भैज्यो, पण वीं पर तानाशाही राजनेता विचार तक कोनी कीयो, आ राजस्थानियॉ रै लिये अपमानजनक बात है। अब समय आ गयौ है कै संब राजस्थानी एकजुट होय जन-जागरण रै वास्ते अभियान सरु करैं। वक्तव्य के पीछे जो सोच है वह उनकी ही इन पक्तियों में झलकती है –

खाली धड़ री कद हुवै चैरे बिना पिछाण
मायड़ भासा रे बिन्या, क्या रो राजस्थान
महाकवि सेठियाजी की स्मृति को शत्-शत् नमन!

शिव कुमार लोहिया

अध्यक्षीय

समाज शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में सेवा के लिए समाज आगे आये!

– सन्तोष सराफ

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन समाज की एकमात्र राष्ट्रीय प्रतिनिधि संस्था है जो समग्र समाज के हित की बात करती है। समाजहित का राष्ट्र की प्रगति के साथ समन्वय करके पिछले ८३ वर्षों से सम्मेलन गतिशील है। विशेषकर समाजहित में हमारी खूबियों को बचाने में सम्मेलन प्रयत्नशील रहता है। साथ ही समाज की खामियों, त्रुटियों एवं कुरीतियों पर भी नजर रखता है। वैचारिक स्तर पर जनमानस तैयार करके इस कार्य को अंजाम देना सरल नहीं है। अनेक विषयों में सम्मेलन ने सफलता पाई है। हम सभी इस बात को जानते हैं। पिछले कुछ वर्षों से सम्मेलन ने सेवा क्षेत्र में भी अपना पदक्षेप किया है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रांतीय स्तर में बारहवीं तक के छात्र-छात्राओं को विभिन्न कार्यक्रमों के तहत उत्साहित किया जाता है। अखिल भारतीय स्तर पर पिछले कुछ वर्षों से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में समाज के होनहार नवयुवकों को आर्थिक योगदान देने का कार्यक्रम सफलता के साथ संचालित हो रहा है। इसका व्यापक स्वागत एवं सराहना हुई है। सम्मेलन की प्रांतीय इकाइयाँ समाजसेवा के अन्य कार्यों मे भी अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही हैं। यह स्वागत योग्य कदम है। मुझे इनमें से कुछ कार्यक्रमों मे शामिल होने का सुअवसर मिला है। इस प्रकार के कार्यों से समाज पर सकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है। वर्तमान परिवेश में स्वास्थ्य सेवा के बढ़ते खर्चे के दबाव में औसत व्यक्ति परेशान है। इस क्षेत्र में समाज को अपना सहयोग का हाथ बढ़ाने की आवश्यकता है।

समाज में आज चारों ओर धार्मिक, सामाजिक एवं पारिवारिक मांगलिक अनुष्ठान होते रहते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर हो या संस्थागत स्तर पर, इस प्रकार के आयोजनों की संख्या में दिन पर दिन वृद्धि हो रही है। सैकड़ों तो कहीं हजारों की संख्या में लोग भाग लेते हैं। जाहिर है इस प्रकार के आयोजनों में लाखों से लेकर कराड़ों तक का खर्च होता है। मेरे विचार से हमें यह विचार करना चाहिए कि इस प्रकार के अंधाधुंध खर्च पर लगाम खासकर समाज के कमजोर एवं उपेक्षित वर्ग की निहायत जरूरी आवश्यकताओं को पूरा करने की हमें अपना सहयोग का हाथ बढ़ाना चाहिए। परस्पर सहयोग से ही समाज सुदृढ़ होता है। समाज सुदृढ़ हुए बिना व्यक्तिगत सम्पन्नता बेमानी हो जाती है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेक काम करने की संभावनाएँ एवं अवसर मौजूद हैं। शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम हमारी अज्ञानता दूर करने के साथ-साथ आर्थिक स्थिति को भी मजबूत कर सकते हैं। समाज के प्रत्येक बच्चे को स्तरीय शिक्षा का अवसर प्राप्त हो, यह समाज के सुविधासम्पन्न वर्ग का पवित्र दायित्व है। इस दायित्व से हम मुक्त तभी हो सकते हैं जब इस दिशा में हम अपना सार्थक सहयोग दें। आर्थिक सहयोग, प्रोत्साहन के साथ शिक्षा के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना होगा। हमारे नवयुवकों को हमारे संस्कार एवं संस्कृति से अवगत कराना भी आवश्यक है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में सेवा की संभावनाएँ व्यापक है। हमारे पूर्वजों ने बींसवी शताब्दी के शुरूआत से ही इस क्षेत्र में सशक्त शुरूआत की थी। मारवाड़ी रिलीफ सोसाईटी, विशुद्धानंद मारवाड़ी अस्पताल जैसे संस्थानो की स्थापना एवं सुचारु संचालन कर पीड़ित मानवता की सेवा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अपने जीवन काल में महात्मा गांधी ने भी उसकी सराहना की थी। आज समाज का धन मानव सेवा मे खर्च हो रहा है। विभिन्न प्रकार के अनुष्ठानों के लिए आनन फानन में लाखों-करोड़ों का चंदा इकट्ठा हो जाता है। पर समाज सेवा के स्थायी स्तम्भों के निर्माण में कमी आ रही है। संस्थाओं में आज समर्पित कार्यकर्त्ताओं की भी कमी हो रही है। एक समय था जब समाज की संस्थाएँ सेवा के नये से नये प्रतिमान स्थापित करते थे। अपने निष्ठापूर्वक सेवाकार्यो के कारण पूरे देश में उनकी ख्याति थी। वे सेवा के किसी अवसर को खोना नहीं चाहते थे। देश मे कहीं भी बाढ़, प्राकृतिक आपदा में सबसे पहले अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने वाली हमारे समाज की संस्थाएँ होती थी। हाल ही मे जैन महासभा के कार्यक्रम में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेने का अवसर मिला। ७ एकड़ भूमिखंड में डेंटल, बी.एड. एवं स्नातकीय कालेज के द्वारा समाज की सेवा हो रही है। ढांढड सती मंदिर में भी शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर भक्तगणों को सहायता देने पर विचार हो रहा है।

समाज के सभी वर्गों से मेरा विनम्र निवेदन है कि सेवा के माध्यम से समाज को हम गौरवान्वित करें। अनुष्ठानों में फिजूलखर्ची, आडम्बर एवं दिखावा न कर समाज एवं राष्ट्र-उत्थान में धन का उपयोग करें। इससे समाज की छवि निखरने के साथ-साथ समाज में परस्पर सहयोग एवं सेवा की भावना भी सुदृढ़ होगी। समय का यह तकाजा है। इस संबंध में समाजबंधुओं के विचार आमंत्रित हैं।

जय समाज, जय राष्ट्र!

सम्मेलन के संगठन-विस्तार की गति उत्साहवर्धक : संतोष सराफ

पन्द्रह महीने में बने आठ हजार नये सदस्य

दक्षिण भारत के प्रत्येक प्रान्त में बढ़ी पैठ

"वर्तमान सत्र में प्रादेशिक शाखाओं और केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारियों की सक्रियता के बल सम्मेलन के संगठन-विस्तार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जो अत्यंत उत्साहवर्धक है। उत्कल, बिहार, पूर्वोत्तर एवं पश्चिम बंग की प्रादेशिक शाखाओं ने इस दिशा में महनीय कार्य किया है। इन प्रादेशिक शाखाओं के अध्यक्ष क्रमशः श्री अशोक जालान, श्री बिनोद तोदी, श्री मधुसूदन सीकरिया एवं श्री नंद किशोर अग्रवाल एवं इनकी टीमों ने प्रशंसनीय कार्य किया है। झारखंड, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु आदि प्रान्तों ने भी सक्रियता बनाये रखी है। राष्ट्रीय उपाध्यक्षगण श्री गोवर्धन गाड़ोदिया एवं श्री पवन गोयनका तथा दक्षिण भारत के संगठन-विस्तार के प्रभारी श्री बसंत मित्तल के सक्रिय प्रयासों से दक्षिण भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में सम्मेलन की पैठ बढ़ी है।" ये विचार राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने गत १५ सितम्बर २०१९ को सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक में व्यक्त किए। **बैठक पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में** कांकुड़गाछी, कोलकाता स्थित पवन पुत्र बंक्वेट हॉल में आयोजित की गई।

सम्मेलन की गतिविधियों के विषय में बोलते हुए श्री सराफ ने कहा कि वर्तमान सत्र में लगभग आठ हजार नये सदस्य ने हैं जो अभूतपूर्व है। उन्होंने अपने दौरों, राजनैतिक चेतना हेतु सम्मेलन के कार्यक्रमों, भारत निर्माण अवार्ड द्वारा समाज-कल्याण की गतिविधियों हेतु सम्मेलन का सम्मान, लोकसभाध्यक्ष से सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडल की भेंट, रोजगार-सहायता, उच्च शिक्षा कोष, सम्मेलन वेबसाइट के आधुनिकीकरण सहित सम्मेलन की प्रमुख गतिविधियों के विषय में संक्षेप में बताया।

बैठक में सर्वप्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ दीप-प्रज्ज्वलन किया। तत्पश्चात् पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री नंद किशोर अग्रवाल** ने केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारियों का स्मृतिचिह्न देकर स्वागत किया। अपने स्वागत-वक्तव्य में सभी उपस्थितों का अभिनंदन करते हुए श्री अग्रवाल ने अखिल भारतीय समिति की बैठक के आतिथ्य के अवसर हेतु केन्द्रीय नेतृत्व का आभार व्यक्त किया।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने अपने संबोधन में सक्रियता एवं कार्यक्रमों की निरंतरता की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि युवा मंच से हमारे प्रगाढ़ सम्बंध हैं, और समाज सुधार कार्यक्रमों की सफलता के लिए महिला सम्मेलन से भी जुड़ाव आवश्यक है। प्रान्तीय शाखाओं को भी इस दिशा में पहल करनी चाहिए। **समरसता पर भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि सम्मेलन पूरे देश में फैला हुआ है और हमें स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखना ही होगा।** उन्होंने देश के सभी जिलों तक सम्मेलन की पहुँच बनाने, शाखायें स्थापित करने को जरूरी बताया और कहा कि जिन जिलों में सम्मेलन की शाखायें हैं, वहाँ के अध्यक्षों और मंत्रियों की एक निर्देशिका भी बनानी चाहिए।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री नंदलाल रुँगटा** ने अपने उद्‌बोधन में संगठन-विस्तार में उल्लेखनीय उपलब्धियों हेतु केन्द्रीय टीम एवं प्रान्तीय शाखाओं को बधाई दी। **मायड़ भाषा राजस्थानी के महत्व पर बल देते हुए श्री रुँगटा ने कहा कि संविधान की आठवीं अनुसूची में इसे शामिल कराने का हर सम्भव प्रयास तो**

होना ही चाहिए किन्तु उससे भी आवश्यक है इसका प्रचार-प्रसार। उन्होंने कहा कि हम सभी को अपने घरों एवं आपसी बातचीत में अपनी भाषा का प्रयोग करना चाहिए। श्री रुँगटा ने सलाह दी कि राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर सामाजिक सेवाओं और सदस्यता-विस्तार के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु एक-एक प्रान्तीय शाखा को पारितोषिक देकर सम्मानित करना चाहिए।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया** ने बिहार सम्मेलन द्वारा प्रकाशित मारवाड़ी रीति-रिवाजों का विवरण देती पुस्तिका '**नेग-चार**' की प्रशंसा की एवं कहा कि इसका प्रकाशन सामयिक है। उन्होंने कहा कि सम्मेलन के उच्च शिक्षा कोष से जिन छात्र-छात्राओं की मदद की गई है और वे आत्मनिर्भर हो गए हैं, अगर अपनी राशि लौटायें तो इससे और छात्र-छात्राओं को मदद दी जा सकती है। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री रामअवतार पोद्दार** ने संगठन-विस्तार में प्रगति पर हर्ष प्रकट किया और केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारियों को बधाई दी।

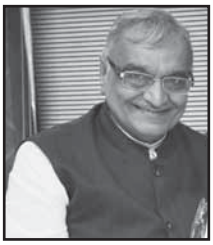

बैठक में अखिल भारतीय समिति की पिछली बैठक (०३ मार्च २०१९; हैदराबाद) का कार्यवृत सर्वसम्मति से पारित हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री **श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला** ने पिछली बैठक के बाद के सम्मेलन की गतिविधियों पर '**महामंत्री की रपट**' एवं वर्तमान सत्र में अखिल भारतीय समिति द्वारा लिए गए निर्णयों पर '**कार्यवाही की रपट**' प्रस्तुत की। उन्होंने अपने वक्तव्य में राष्ट्र की वर्तमान स्थिति एवं राष्ट्रीय-सामाजिक विषयों पर प्रकाश डाला।

कार्यसूची के अनुसार, **सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा सम्मेलन की आजीवन सदस्यता शुल्क में बढ़ोतरी की प्रभावी तिथि ०१ जुलाई २०१९ से बढ़ाकर ०१ अक्तूबर २०१९ करने के निर्णय को स्वीकृत देने** के विषय पर विचार-विमर्श हुआ। विचार-विमर्श में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, झारखंड सम्मेलन के अध्यक्ष श्री निर्मल काबरा, सम्मेलन की रोजगार सहायता उपसमिति के चेयरमैन श्री दिनेश जैन, छत्तीसगढ़ सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया एवं महामंत्री श्री अमर बंसल, बिहार सम्मेलन के अध्यक्ष श्री बिनोद तोदी, पूर्वोत्तर सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकारिया, श्री महेन्द्र भगानिया, श्री बाबूलाल अग्रवाल, श्री निर्मल झुनझुनवाला, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया आदि ने भाग लिया और अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री एवं सम्मेलन की संविधान उपसमिति के संयोजक श्री संजय हरलालका ने विषय से सम्बंधित संवैधानिक प्रावधानों और अखिल भारतीय समिति द्वारा स्वीकृति न दिए जाने की स्थिति में सम्भावित जटिलताओं पर प्रकाश डाला। तथापि इस विषय पर मतैक्य नहीं था। विचार-विमर्श में भाग लेते हुए पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नंदलाल रुँगटा ने कहा कि समयानुसार शुल्कों में परिवर्तन स्वाभाविक है और यह विषय दीर्घलम्बित है, अतः इसका शीघ्र निपटान करना चाहिए। सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि विषय से सम्बंधित सभी प्रासंगिक पहलू सामने लाये गये हैं और स्तरीय विवेचन हुआ है। यह कहते हुए कि अखिल भारतीय समिति की पिछली बैठक, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की पिछली दो बैठकों, संविधान-संशोधन उपसमिति की बैठक आदि में इस विषय पर विशद विचार-विमर्श हो चुका है, उन्होंने सलाह दी कि राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा लिए गए निर्णय को स्वीकृत किया जाए। तत्पश्चात् **राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा लिए गए इस निर्णय को सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया।**

उत्कल सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री अशोक जालान** ने प्रांतीय गतिविधियों के विषय में बताते हुए कहा कि वर्तमान सत्र में ३,७०० आजीवन सदस्य बनाये गये हैं। संगठन-विस्तार को सम्मेलन के मेरूदंड की तरह बताते हुए श्री जालान ने कहा कि इससे सामाजिक सुधारों, संस्कार-संस्कृति संरक्षण सहित सभी क्षेत्रों में भी मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सत्र में हमारा ५० विशिष्ट संरक्षक सदस्य बनाने का भी लक्ष्य है। श्री जालान ने कहा कि रोजगार, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में कार्यक्रमों से सम्मेलन के प्रति समाज का आकर्षण बढ़ता है। उत्कल सम्मेलन के शिक्षाकोष के सुचारु संचालन एवं निकट भविष्य में मारवाड़ी छात्रावास के उद्घाटन के विषय में उन्होंने बताया। श्री जालान ने सलाह दी कि विशिष्ट संरक्षक सदस्यों को कोलकाता में निर्माणाधीन सम्मेलन भवन में ठहरने और इसी प्रकार की अन्य संभव सुविधायें देने के विषय में विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मारवाड़ियों की जनगणना के विषय में भी सम्मेलन को पहल करनी चाहिए।

छत्तीसगढ़ सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री पुरुषोत्तम सिंघानिया** ने बताया कि छत्तीसगढ़ सम्मेलन के पुनर्गठन के बाद के गत डेढ़ सालों में प्रदेश में सम्मेलन को परिचिति मिली है। समाजबंधुओं का झुकाव बढ़ा है और संगठन-विस्तार की सम्भावनायें भी हैं। उन्होंने प्रादेशिक सम्मेलन द्वारा शिक्षक दिवस के अवसर पर शिक्षकों का सम्मान, नवरात्र में भंडारे का आयोजन, वनवासी कल्याण आश्रम, रायपुर में भारत माता पूजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा फ्रिज का दान,

अग्रसेन चौक, रायपुर में प्याऊ की स्थापना आदि गतिविधियों के विषय में बताया। श्री सिंघानिया ने कहा कि समाज के युवक-युवतियों के विवाह में सहयोग के लिए निकट भविष्य में परिचय सम्मेलन आयोजित करने का कार्यक्रम है जिसके लिए वेबसाइट बनवाया जा रहा है।

झारखंड सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री निर्मल काबरा** ने बताया कि प्रदेश सम्मेलन के वर्तमान सत्र में ६६७ नये सदस्य बने हैं। ११ नये विशिष्ट संरक्षक सदस्य बने हैं और १८ संरक्षक सदस्यों ने विशिष्ट संरक्षक सदस्यता ग्रहण की है। उन्होंने जमशेदपुर में राजस्थान दिवस के भव्य आयोजन एवं आगामी १२ जनवरी २०२० को प्रादेशिक सम्मेलन के नये अध्यक्ष के चुनाव के विषय में बताया। श्री काबरा ने समाज विकास के सुचारु प्रेषण और सदस्यों को पहचान पत्र देने के विषय में विचार का अनुरोध किया।

बिहार सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री विनोद तोदी** ने कहा कि समाज के लोगों को संगठन की आवश्यकता महसूस होगी, तभी हमारा संगठन मजबूत होगा। हमें समाज के पास जाना पड़ेगा। सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में, स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करें, जब लोगों को विश्वास होगा तब स्वयं जुड़ेंगे। बिहार सम्मेलन के महामंत्री **श्री महेश जालान** ने

बिहार सम्मेलन के प्रमुख कार्यक्रमों के विषय में बताते हुए कहा कि बिहार सम्मेलन समरसता को ध्यान में रखते हुए इतर समाज के लोगों के लिए भी कई कार्यक्रम चलाता है जिनमें विकलांगता मुक्त बिहार के लिए कई अस्पतालों से 'टाई अप', पूरे रीति-रिवाजों के साथ कन्या-विवाह, रक्तदान एवं अंगदान जैसे कार्यक्रम शामिल हैं। समाजबंधुओं के लिए कार्यक्रमों में युवक-युवतियों के विवाह के लिए वेबसाइट www.marwarisammelanshadi.com एवं ह्वाट्सअप के माध्यम से सहयोग, रोजगार-सहायता, छात्रवृति, मेदान्ता एवं पारस अस्पतालों में छूट, अग्रसेन कन्या-विवाह योजना के माध्यम से इस मद में ५१,०००/- रुपयों का सहयोग, मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए शिक्षा गौरव सम्मान, शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए सरस्वती सम्मान, चिकित्सकों के लिए धनवंतरि सम्मान एवं किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए समाज रत्न सम्मान आदि शामिल हैं।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री मधुसूदन सीकरिया** ने बताया कि गत वित्तीय वर्ष में प्रदेश में १०८९

नये सदस्य बने और वर्तमान वित्तीय वर्ष के तीन महीनों में ही १०५४ नये सदस्य बन चुके हैं। प्रांतीय पदाधिकारी सुस्त पड़ी शाखाओं को गति देने हेतु लगातार दौरे कर रहे हैं। समाज की अन्य संस्थाओं से जुड़ाव के लिए पिछले एक वर्ष में सक्रिय प्रयास किए गए हैं, जिसके अच्छे परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। असम में राष्ट्रीय नागरिक पंजी पर चल रही प्रक्रिया के आलोक में पूर्वोत्तर इकाई समाजबंधुओं का नाम इसमे समाहित करने के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रही है। समाज के लगभग ९० प्रतिशत लोगों के नाम समाहित हो चुके हैं, बाकियों के लिए प्रयास चल रहा है। असम समझौते के धारा ६ के अन्तर्गत समाज पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव के सम्बंध में केन्द्रीय सरकार को एक ज्ञापन सौंपा जाएगा। उन्होंने प्रादेशिक इकाई द्वारा सम्मेलन के इतिहास एवं असम में मारवाड़ी समाज के इतिहास पर पुस्तकों के प्रकाशन, विवाह में युवक-युवतियों का सहयोग, प्रतिभावान बच्चों को परिचिति, पत्रिका 'सम्मेलन समाचार' का प्रकाशन, जनवरी २०२० में प्रांतीय अधिवेशन का आयोजन आदि के विषय में संक्षेप में बताया।

पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री नंद किशोर अग्रवाल** ने प्रान्त में संगठन-विस्तार की प्रगति के विषय में बताते हुए कहा कि वर्तमान सत्र में प्रांत में शाखाओं की संख्या ३ से १९ हो गयी है, तीन हजार से अधिक नये सदस्य बने हैं। उन्होंने कहा कि कुछ सामाजिक समस्याएँ ऐसी हैं जिन्हें महिलाओं के सहयोग से ही सुलझाया जा सकता है इसलिए मातृशक्ति को सम्मेलन से जोड़ना नितांत आवश्यक है। श्री अग्रवाल ने राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं अपनी सभ्यता-संस्कृति के विषय में आने वाली पीढ़ियों को सजग-सचेत रखने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने बैठक के कुशल आयोजन के लिए पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नंद किशोर अग्रवाल एवं उनकी पूरी टीम का आभार व्यक्त करते हुए, श्री अग्रवाल को स्मृति-विह्न देकर सम्मानित किया।

बैठक में संगठन-विस्तार के दक्षिण भारत प्रभारी श्री बसंत मित्तल, उत्कल सम्मेलन के महामंत्री श्री बिजय केडिया, श्री पवन जालान, श्री गिरिधर गोपाल अग्रवाल, नरेश अग्रवाल आदि ने भी अपने संक्षिप्त वक्तव्य रखे।

धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने कहा कि सम्मेलन एक परिवार की तरह है और महिला सम्मेलन एवं युवा मंच भी इसके अंग हैं। हमें समाज के हर तबके को साथ लेकर आगे बढ़ना है। उन्होंने कहा कि सम्मेलन के कार्यक्रमों के साथ-साथ राष्ट्रहित में

श्री बसंत मित्तल *श्री निर्मल झुनझुनवाला* *श्री कमल नोपानी* *श्री अमर बंसल* *श्री विजय केड़िया* *श्री दिनेश जैन*

चलाये जा रहे स्वच्छ भारत अभियान, पर्यावरण-संरक्षण, जैसे कार्यक्रमों में भी हमें यथासम्भव सहयोग करना चाहिए। श्री गाड़ोदिया, जो कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना, पूर्वोत्तर एवं गुजरात प्रांतों के प्रभारी भी हैं, ने कहा कि संगठन-विस्तार की प्रगति संतोषजनक है लेकिन हमें इसे गतिशील बनाये रखना है।

बैठक में राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्री दामोदर बिदावतका, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री गोपाल अग्रवाल, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कमल नोपानी, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया, सर्वश्री आत्माराम सोंथलिया, बिश्वनाथ मारोठिया, सुरेश सोंथलिया, गौरीशंकर अग्रवाल, जगदीश गोलपुरिया, मनोज जैन, नंदलाल सिंघानिया, गोविन्द अग्रवाल, शिव रतन अग्रवाल, संदीप सेक्सरिया, जुगल किशोर जाजोदिया, राजीव केजरीवाल, श्याम सुन्दर टिबड़ेवाल, दिनेश चौधरी, राज कुमार मूँधड़ा, रंजीत कुमार डालमिया, गिरिधर गोपाल अग्रवाल सहित अच्छी संख्या में गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

समारोह के कुशल आयोजन में पश्चिम बंग सम्मेलन के सर्वश्री शिव कुमार अग्रवाल, गोपी धुवालिया, कमल कुमार सरावगी, नितिन अग्रवाल, पंकल केडिया, अनिल डालमिया, आकाश गुप्ता आदि ने सक्रिय भूमिका निभाई।

बैठक के दौरान राष्ट्रगान!

विशेष अनुरोध

समाज विकास में प्रत्येक माह समाज के विभिन्न विषयों पर सामग्री प्रकाशित होती है। पाठकों से अनुरोध है कि उन विषयों पर अपनी राय भेजें। पत्र डाक, कोरियर या इमेल से भेजा जा सकता है।

Email ID: editorsamajvikas@gmail.com

MARWARI SAMMELAN FOUNDATION

(A Trust of All India Marwari Federation)

उच्च शिक्षा कोष

समाज के बच्चों को शिक्षित कर परिवार को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में पहल

विगत ८ वर्षों में देश के विभिन्न भागों के सैंकड़ों छात्र-छात्राओं को करीब दो करोड़ रुपयों का दिया जा चुका है अनुदान

वित्तीय वर्ष (२०१८-१९) में ५२ लाख रुपयों से अधिक का आवंटन

"Education is a fundamental human right and essential for excercise of all other human rights."

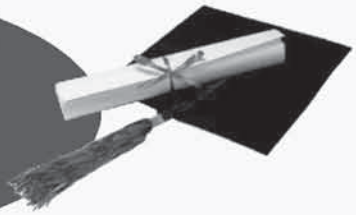

उदारहृदय समाजबंधुओं का मिल रहा है तहेदिल से साथ

आप भी बढ़ाएँ सहयोग का हाथ समाज के सर्वांगीण विकास में बनें भागीदार !

छात्र/छात्राएँ नि:शुल्क छात्रवृत्ति के लिये सम्पर्क करें

इंजीनियरिंग, टेक्निकल, चिकित्सा, मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में स्नातकोत्तर/उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति हेतु समाज के मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं से आवेदन आमंत्रित हैं।

पात्रता : (क) १७ और २५ वर्षों के बीच के उम्र के मेधावी छात्र-छात्राएँ जिनका शैक्षिक परीक्षाओं में प्रदर्शन उत्कृष्ट रहा हो और जिन्हें केवल अपनी योग्यता के बल पर किसी मान्यताप्राप्त शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल रहा हो।

(ख) जिन आवेदकों के माता-पिता की वार्षिक आय तीन लाख रुपयों से कम होगी, उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।

प्रक्रिया : (क) पूर्व शैक्षिक प्रमाणपत्रों, प्रवेश के प्रमाण, माता-पिता के आय प्रमाणपत्र एवं पासपोर्ट साइज चित्रों के साथ, मारवाड़ी सम्मेलन की किसी शाखा/सम्बद्ध संस्था से अनुमोदित आवेदन प्रस्तुत करने हैं।

(ख) एक छात्र-छात्रा को वर्ष में अधिकतम दो लाख रुपयों की राशि अनुदानस्वरूप दी जा सकती है।

(ग) प्रतिवर्ष कुछ छात्रवृत्तियाँ छात्राओं के लिए सुरक्षित हैं।

आवेदन करें : *चेयरमैन, उच्च शिक्षा उपसमिति, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन*

४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-१७, फोन : (०३३) ४००४४०८९, ईमेल : aimf1935@gmail.com

सम्मेलन की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक

समाज सुधार में मातृशक्ति की भागीदारी महत्वपूर्ण : संतोष सराफ

"कोई भी सामाजिक परिवर्तन एक जटिल एवं निरंतर प्रक्रिया है और इसके लिए समाज के हर वर्ग का साथ आना आवश्यक है – विशेषकर महिलाओं का। महिलाएँ न केवल आधी आबादी हैं बल्कि प्रत्येक बालक-बालिका की पहली शिक्षक भी हैं, अतः सामाजिक सुधारों के लिए महिलाओं की भागीदारी अति आवश्यक है।" ये विचार अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने गत २१ सितम्बर २०१९ को शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता स्थित सम्मेलन मुख्यालय सभागार में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में व्यक्त किए।

बैठक का सभापतित्व करते हुए श्री सराफ ने सर्वप्रथम सबका स्वागत किया और सम्मेलन की वर्तमान गतिविधियों के विषय में संक्षेप में बताया। संगठन-विस्तार की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए उन्होंने इस क्षेत्र में **महत्वपूर्ण उपलब्धियों हेतु उत्कल, बिहार, पूर्वोत्तर एवं पश्चिम बंगाल की प्रादेशिक शाखाओं की सक्रियता की प्रशंसा की।** ०६ सितम्बर २०१९ एवं १४ सितम्बर २०१९ को आयोजित क्रमशः **'मित्रता-दोस्ती : एक बातचीत' एवं 'मारवाड़ी की साख – उसकी पहचान'** विषयों पर संगोष्ठियों की चर्चा करते हुए श्री सराफ ने कहा कि विद्वान वक्ताओं ने सारगर्भित वक्तव्य दिए तथा विचार-विमर्श ज्ञानवर्धक रहा। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से प्रासंगिक सामाजिक विषयों पर समाजबंधुओं का ध्यानाकर्षण होता है, आवश्यक जानकारी मिलती है, अतः इनका आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बैठक में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की गत बैठक (०७ जुलाई २०१९; कोलकाता) का कार्यवृत पारित हुआ। राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री **श्री संजय हरलालका** ने पिछली बैठक के बाद के सम्मेलन की गतिविधियों पर **'महामंत्री की रपट'** एवं वर्तमान सत्र में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा लिए गए निर्णयों पर **'कार्यवाही की रपट'** प्रस्तुत की।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री रामअवतार पोद्दार** ने हाल में सम्मेलन के संगठन-विस्तार में हुई प्रगति को हर्ष का विषय बताया। श्री पोद्दार, जो सम्मेलन की संविधान उपसमिति के चेयरमैन भी हैं, ने हाल में ही सम्पन्न हुई संविधान-संशोधन की प्रक्रिया सुचारु रूप से सम्पन्न कराने के लिए सभी सम्बंधियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आज समाज में नित नई कुरीतियाँ पनप रही हैं जो चिन्ता का विषय है। हम सभी को इनसे सचेत रहना चाहिए और इस विषय पर युवक-युवतियों, किशोर-किशारियों को भी शिक्षित-सजग करना चाहिए।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने बताया कि गत १९ सितम्बर २०१९ को आयोजित सम्मेलन की पुरस्कार चयन उपसमिति की बैठक में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री नंदलाल रुँगटा ने राय दी है कि सम्मेलन के राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान दिए जाने वाले समाज सेवा सम्मान की राशि ग्यारह हजार रुपये से बढ़ाकर इक्यावन हजार रुपये कर दिया जाय।** उन्होंने प्रस्ताव रखा कि यह बढ़ोतरी स्वीकृत की जाये। **विचार-विमर्श के बाद समिति ने इसे सर्वसम्मति से पारित किया।**

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री कैलाशपति तोदी** ने बताया कि सम्मेलन की वेबसाइट के आधुनिकीकरण का कार्य द्रुत गति से चल रहा है। उन्होंने कहा कि वेबसाईट 'ई.आर.पी. बेस्ड' होगी। इसके कुछ अनुभागों ने कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है और बाकी काम भी शीघ्र पूरा किया जाएगा।

पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री शिव कुमार लोहिया** ने कहा कि राष्ट्रीय एवं सामाजिक महत्व के ज्वलंत मुद्दों यथा स्वच्छता, वन टाईम प्लास्टिक के उपयोग पर पाबंदी, आदि में एक अग्रणी एवं सचेत राष्ट्रीय सामाजिक संस्था के रूप में सम्मेलन की एवं व्यक्तिगत तौर पर हम सभी की भी भागीदारी होनी चाहिए।

अंत में सम्मेलन के संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री **श्री दामोदर प्रसाद बिदावतका** ने धन्यवाद-ज्ञापन किया एवं बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वश्री नंदलाल सिंघानिया, गोविन्द प्रसाद केजरीवाल, भानीराम सुरेका, जुगल किशोर जाजोदिया, पवन कुमार जालान, रमेश कुमार बूबना आदि उपस्थित थे।

तेलंगाना सम्मेलन का अभिनंदन समारोह

गत १७ सितम्बर २०१९ को तेलंगाना प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा कंपनी सेक्रेटरी (सीएस) परीक्षा में जनवरी-२०१९ के बाद उत्तीर्ण युवा प्रतिभाओं तथा कास्ट एंड मैनेजमेंट एकाउंटेट (सीएमए) का अभिनंदन समारोह आबिड्स रोड, हैदराबाद स्थित राजस्थानी स्नातक भवन में आयोजित किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में जयपुर पुलिस मुख्यालय में क्राइम ब्राँच के डीआईजी प्रसन्न कुमार खमेसरा, आईपीएस उपस्थित थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि यदि हम अपनी संतान के कैरियर के बारे में सोचते समय अंतिम निर्णय स्वयं लेने की जगह यदि उसके विचार और रुचि भी निर्णय प्रक्रिया में सम्मिलित करते हैं और उसको प्रोत्साहित करते हैं, तो विश्वास कीजिए कि वह हमारी अपेक्षाओं से अधिक सार्थक परिणाम देगा। अतिथियों एवं प्रतिभाओं का स्वागत करते हुए प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने कहा कि वाणिज्य एवं उद्योग निकाय से जुड़े कास्ट एंड मैनेजमेंट एकाउंटेंटस तथा कंपनी सेक्रेटरी अपने क्लाइंट की एवं रचनात्मक मार्गदर्शन से उसके उद्योग या व्यवसाय की सफलता सुनिश्चित करता है। सम्मानीय अतिथि अभिनय विश्वकर्मा ने प्रतिभाओं का मार्गदर्शन करते हुए सुझाव दिया कि चुनौतियों से जूझने का आपका दृढ़ विश्वास एवं विफलताओं पर निरंतर आत्मवलोकन आपकी सफलता को सुनिश्चित करता है।

पूजा गुप्ता, आईपीएस और नेहारिका सिंह, आईआरएस ने अपने संबोधन में कहा कि युवा प्रतिभाओं में महिलाओं की बड़ी संख्या में सफलता महिला मशक्तिकरण की सोच को सार्थक कर रही है। महिला वर्ग की कर्मठता एवं भागीदारी अनुकरणीय और सराहनीय है।

अतिथियों का पारंपरिक सम्मान सीएस सुमन हेड़ा, पुष्पा बूब, लक्ष्मीनारायण राठी, सोहनलाल कड़ेल एवं रामप्रकाश भंडारी ने किया। कार्यक्रम का संचालन प्रादेशिक सम्मेलन के महामंत्री रामपाल अट्टल ने किया। अतिथियों का परिचय संयोजक सीएस द्वारका असावा एवं सीए संदीप झँवर ने दिया। कार्यक्रम में लक्ष्मीनिवास सारड़ा, भगवानदास बूब, दीपक कुमार बंग, अमीत लड्ढा, जयप्रकाश लड्ढा व अन्य ने सहयोग प्रदान किया।

युवा कंपनी सेक्रेटरी (सीएस) अंकिता हेड़ा, अनुश्री डालिया, दिव्यांकी शर्मा, गौरव अग्रवाल, हेमावती मालपाणी, किशोर कुमार मूंदड़ा, लवेश गोयल, मोहित मित्तल, नेहा मित्तल, निधि कलंत्री, निशा झँवर, नितिन कुमार सारड़ा, प्रफुल्ल लड्ढा, राधेश्याम इन्नाणी, रक्षिता बंसल, सागर भट्टड़, साक्षी जैन, सोनल बाहेती, साक्षी काबरा एवं यशवर्धन जोशी का अतिथियों ने सम्मान कर स्मृति चिह्न प्रदान किए। कास्ट एंड मैनेजमेंट एकाउंटेंड (सीएमए) के रूप में संदीप झँवर, अश्विन नाराणिया, राजरानी सारड़ा, मनीष बंग, सौम्या झुनझुनवाला, संजोवता जोशी, अभिषेक शर्मा एवं गोपल बंग का सम्मान स्मृति चिह्न प्रदान कर किया गया। कास्ट एंड मेनेजमेंट एकाउंटेंट में स्टेट टॉपर स्पर्श झुनझुनवाला का सभी ने करतल ध्वनि से अभिनंदन किया। अतिथियों को प्रादेशिक सम्मेलन के अध्यक्ष रमेश कुमार बंग ने स्मृति चिह्न प्रदान किए। प्रादेशिक सम्मेलन के संयुक्त मंत्री मदन व्यास ने आभार व्यक्त किया।

अग्रवाल सभा, राँची द्वारा सामूहिक विवाह का आयोजन

अग्रवाल सभा, राँची से सूचना प्राप्त हुई है कि उनके द्वारा आयोजित २६वाँ सामूहिक विवाह आगामी ०८ नवम्बर २०१९ (शुक्रवार; देवउठनी एकादशी – तुलसी विवाह) को सम्पन्न होगा। महाराजा अग्रसेन के सभी १८ गोत्री अग्रवाल वंशज एवं बृहत्तर मारवाड़ी समाज के लोग इस आयोजन में सहभागी बन सकते हैं। पंजीकरण की अंतिम तिथि २५ अक्तूबर २०१९ है।

इस सम्बंध में इच्छुक समाजबंधु, सामूहिक विवाह के मुख्य संयोजक श्री भागचंद पोद्दार (पूर्व अध्यक्ष, झारखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन) से मोबाईल नं. ९८३५५ ०२६३० या अग्रवाल सभा, राँची के कार्यालय से दूरभाष ०६५१-२२२६०९४ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

गत २२ सितम्बर २०१९ को नन्दो मल्लिक लेन, कोलकाता स्थित ओसवाल भवन में पश्चिम बंग के महामहिम राज्यपाल श्री जगदीप धनकड़ के सम्मान में एक संवर्द्धना समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध उद्योगपति-समाजसेवी श्री बेणुगोपाल बाँगड़ ने की। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ एवं अखिल भारतीय क्षत्रिय समाज के मुख्य संरक्षक श्री जयप्रकाश सिंह विशिष्ट अतिथि थे। महामहिम ने अपने संबोधन में कहा कि अपने दायित्व को निष्ठापूर्वक निभाना ही मेरा लक्ष्य रहेगा। श्री बेणुगोपाल बाँगड़ ने राज्यपाल का पदभार ग्रहण करने पर उन्हें बधाई दी। श्री संतोष सराफ ने कहा कि हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पूर्वजों की धरती से राज्यपाल महोदय के रूप में हमें अभिभावक मिला है। समारोह में वृहत्तर कोलकाता की पचास से अधिक सामाजिक संस्थाओं ने भाग लिया। चित्र में (बायें) सर्वश्री महावीर बजाज, अरुण प्रकाश मल्लावत, बेणुगोपाल बाँगड़, महामहिम राज्यपाल श्री जगदीप धनखड़, श्रीमती सुदेश धनखड़, संतोष सराफ, जयप्रकाश सिंह एवं शार्दूलसिंह जैन, (दाहिने) सर्वश्री संतोष सराफ, शिव कुमार लोहिया, शिव रतन फोगला आदि महामहिम से सम्मेलन के विषय में बात करते हुए।

स्केटिंग में प्रियम तातेड़ ने लहराया देश का परचम

सोलह की उम्र और सात अन्तर्राष्ट्रीय पदक! इस कारनामे को अंजाम दिया है नेल्लोर, आन्ध्र प्रदेश निवासी (मूल पैतृक स्थान - ग्राम वराडा, जिला - सिरोही, राजस्थान) **श्रीमती नीता एवं श्री महेन्द्र तातेड़** के सुपुत्र **प्रियम तातेड़** ने।

अपनी बड़ी बहन दिव्या, जो एक अंतर्राष्ट्रीय स्केटर हैं, से प्रेरित हो अत्यंत अल्प आयु में ही प्रियम ने स्केटिंग शुरु कर दी। कहते हैं, पूत के पाँव पालने में ही दिखने लगते हैं- उन्होंने अपना पहला मेडल चार साल की उम्र में जीता। सात साल का होते-होते उनकी विलक्षण प्रतिभा को परिचिति मिलने लगी और परिवारजनों ने आवश्यक संसाधनों, प्रशिक्षण आदि की व्यवस्था की। उनकी साधना सफल हुई, प्रियम उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर हैं, पीछे मुड़कर कभी देखा नहीं।

प्रियम अब तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तीन स्वर्ण और दो रजत सहित कुल सात, राष्ट्रीय स्तर पर सोलह स्वर्ण सहित कुल अट्ठाईस, राज्य स्तर पर सात स्वर्ण सहित कुल सत्रह और जिला स्तर पर छः स्वर्ण सहित कुल तेरह पदक जीत चुके हैं। पूरे देश को गौर्वान्वित करती प्रियम की उपलब्धियों के लिए **इस वर्ष उन्हें भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द के कर-कमलों से प्रधान मंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार-२०१९ से नवाजा गया।** विनम्र प्रियम अपनी सफलता में अपने माता-पिता, बड़ी बहन, जुड़वें भाई प्रथम और अपने प्रशिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन प्रियम की निरंतर प्रगति और उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करता है!

बिहार सम्मेलन द्वारा समूह-नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोहों के अंतर्गत बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा गत १८ अगस्त २०१९ को पटना स्थित बिहार चैम्बर ऑफ कॉमर्स के सभागार में देशभक्ति गीतों पर आधारित एक राज्य-स्तरीय समूह-नृत्य प्रतियोगिता '**ये देश है मेरा**' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में समारोह को संबोधित करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने कहा कि नृत्य हमारे राष्ट्र की प्राचीनतम एवं मनभावन कलाओं में से एक है और इसमें जब देशभक्ति के गीत भी सम्मिलित हों तो

केन्द्रीय-प्रांतीय पदाधिकारियों के साथ पौधा लगाकर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ ने किया समारोह का उद्घाटन।

सोने पर सुहागे वाली उक्ति चरितार्थ होती है। इस प्रकार के आयोजन हमारे किशोर-किशोरियों, युवक-युवतियों को अपनी कला के प्रदर्शन एवं उसे निखारने का अवसर तो प्रदान करते ही हैं, साथ ही, देशभक्ति की भावना का भी संचार करते हैं। इसके अतिरिक्त सुनियोजित प्रतियोगिताएँ खेल-भावना

'नेग-चार' का विमोचन

को बढ़ावा देती है और सफल प्रतिभागियों को जो परिचिति मिलती है, उससे दूसरे भी उत्प्रेरित होते हैं। इस सटीक और सुसामयिक आयोजन हेतु बिहार सम्मेलन धन्यवाद का पात्र है। उन्होंने सक्रियता एवं संगठन-विस्तार में अग्रणी भूमिका हेतु भी बिहार सम्मेलन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

समूह-नृत्य प्रतियोगिता में मुजफ्फरपुर, दरभंगा, बेगूसराय, पुपरी, सहरसा, नवगछिया, खगड़िया, पटना एवं पटना सिटी की लगभग बीस टीमों ने अत्यंत मनोहर प्रस्तुति दी। सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं बिहार प्रांत के प्रभारी श्री विजय किशोरपुरिया एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गोवर्धन गाड़ोदिया सहित बिहार सम्मेलन के पदाधिकारी-सदस्यगण एवं बड़ी संख्या में समाजबंधु समारोह में उपस्थित थे।

बिहार सम्मेलन के अध्यक्ष श्री बिनोद तोदी द्वारा शॉल एवं स्मृति-चिह्न देकर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ का सम्मान।

विजेता टीमों को ट्राफी, मेडल एवं उपहार देकर पुरस्कृत किया गया और सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र दिए गए। इस अवसर पर बिहार सम्मेलन द्वारा प्रकाशित समाज के विभिन्न रीति-रिवाजों के पालन के संबंध में विस्तृत विवरण देती पुस्तिका नेग-चार का विमोचन भी हुआ।

विजेता नृत्य-समूह को पुरस्कृत करते राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विजय किशोरपुरिया।

गत ६ सितम्बर २०१९ को आन्ध्र प्रदेश प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के संगठन-विस्तार अभियान के अन्तर्गत वनटाउन, विजयवाड़ा स्थित माहेश्वरी भवन में एक बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में प्रादेशिक अध्यक्ष श्री चांदमल अग्रवाल ने उपस्थिति समाजबंधुओं को सम्मेलन के विषय में बताया और सभी से सम्मेलन के साथ जुड़ने का अनुरोध किया। बैठक को प्रादेशिक उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार तातेड़, सर्वश्री भोगीलाल जैन, नन्दकिशोर लोया, ओमप्रकाश अग्रवाल, श्यामलाल अग्रवाल आदि ने सम्बोधित किया। प्रादेशिक महामंत्री श्री बिजय अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

गत २९ सितम्बर २०१९ को नन्दो मल्लिक लेन, कोलकाता स्थित ओसवाल भवन में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा कर्मयोगी जुगल किशोर जैथलिया स्मृति व्याख्यानमाला का चतुर्थ आयोजन संपन्न हुआ। चित्र में प्रख्यात साहित्यकार प्रो. सूर्यप्रकाश दीक्षित (लखनऊ) अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए; मंच पर अन्य परिलक्षित हैं डॉ. तारा दूगड़, डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, डॉ. गजादान चारण शक्तिसुत, श्री महावीर बजाज एवं श्री बंशीधर शर्मा।

सूरत, गुजरात के जांगिड़ सुधार समाज द्वारा भगवान श्री विश्वकर्मा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में माता माहिनीदेवी शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट, गांधीधाम द्वारा सवाई माधोपुर, राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि-साहित्यकार पं. ताऊ शेखावाटी को स्व. जंवरीलाल जांगिड़ लखटकिया साहित्य सम्मान पुरस्कार-२०१९ प्रदान किया गया। पं. शेखावाटी ने पुरस्कार-स्वरूप प्राप्त एक लाख रुपयों की राशि से धार्मिक पुस्तकें छपवाकर निःशुल्क वितरित करने की घोषणा की।

भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा इस क्षेत्र में सक्रिय भूमिका हेतु श्री प्रमोद गोयनका को एम. एस.एम.ई. अवार्ड से सम्मानित किया गया।

फलोदी, राजस्थान स्थित पूनम पैलेस में बीकानेर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री रवि पुरोहित को आसु कवि रतनलाल व्यास श्रेष्ठ साहित्य-सृजन पुरस्कार-२०१९ से नवाजा गया। पुरस्कारस्वरूप ग्यारह हजार रुपयों की राशि, सम्मानपत्र, श्रीफल और स्मृति-चिह्न अर्पित किए गए। श्री पुरोहित ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि स्वार्थ की सत्ता, मतलब के अनुशासन के आज के विद्रूप समय में शब्द जैसे गिरवी रख दिया गया है। समारोह में काव्यपाठ एवं पुस्तक-विमोचन का भी आयोजन था।

diva®
from LA OPALA®

CLASSIQUE COLLECTION | IVORY collection | QUADRA COLLECTION | SOVRANA COLLECTION | COSMO collection

Registered Office
Chitrakoot, 10th Floor, 230 A, A J C Bose Road, Kolkata-700020
Ph: 76040 88814/15/16/17 | Email: info@laopala.in | www.laopala.in

अच्छी-सच्ची मित्रता आज अपवाद है : गीतेश शर्मा

'**आज मानवीय मूल्यों का उत्तरोत्तर ह्रास हो रहा है। परिवार बँट रहे है, भाई-भाई के नाम की सुपारी दे रहा है। ऐसे में दोस्ती भी दिखावे की हो गयी है, अच्छी-सच्ची दोस्ती आज अपवाद है।**' ये उद्‌गार वरिष्ठ लेखक-पत्रकार श्री गीतेश शर्मा ने गत ०६ सितम्बर २०१९ को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित '**मित्रता-दोस्ती : एक बातचीत**' विषयक संगोष्ठी में व्यक्त किए। गोष्ठी सम्मेलन के शेक्सपीयर सरणी स्थित सम्मेलन मुख्यालय सभागार में आयोजित की गई।

गोष्ठी में **श्री गीतेश शर्मा**, सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाजचिंतक **श्री सीताराम शर्मा** एवं पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री विश्वम्भर नेवर**, जो पिछले लगभग पाँच दशकों से करीबी मित्र हैं और जिनकी मित्रती की मिसालें दी जाती हैं, को विशेष रूप से निमंत्रित किया गया था। साथ ही इन तीनों के पुराने मित्र **श्री प्रेम कपूर** एवं **श्री बिजय बाघवा** की भी विशेष उपस्थिति थी।

गोष्ठी का सभापतित्व करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने गोष्ठी में सभी का स्वागत किया और कहा कि मित्रता दो मानवों के आंतरिक भावनाओं का मेल है और यह किसी सम्बंध की मोहताज नहीं होती। उन्होंने कहा कि वैसे तो मित्रता किसी से भी हो सकती है लेकिन विचारों में समानता हो तो यह मित्रता के लिए सोने में सुहागे जैसा होता है, प्रगाढ़ता आती है। परस्पर सहयोग कि लिए सदैव, विशेषकर विपत्तिकाल में, तत्पर रहने को मित्रता की कसौटी बताते हुए श्री सराफ ने गोस्वामी तुलसीदास को उद्धृत किया – **जो न मित्र दुःख होहिं दुखारी, तिन्हहिं बिलोकत पातक भारी।**

श्री सीताराम शर्मा ने कहा कि गीतेश शर्मा जी के माध्यम से हमारी दोस्ती हुई और उन्हीं के मार्गदर्शन में हमारा कैरियर आगे बढ़ा। उनके चिंतनों एवं विचारधारा का भी हमारे उपर गहरा प्रभाव पड़ा। वस्तुतः गीतेश जी हमारी प्रेरणा थे। ये कहते हुए कि किशोरावस्था से ही उनकी चारों दोस्ती है, श्री शर्मा ने कई संस्मरण सुनाये।

श्री विश्वम्बर नेवर ने कहा कि गीतेश जी के प्रेरणा से हम सामाजिक क्षेत्र में समान विचारधारा के लोगों से जुड़े। गीतेश जी की मित्रता से पढ़ने और सुनने की रुचि पैदा हुई। उन्होंने कहा कि मित्रता की कोई परिभाषा नही होती। यह निरंकुश होती है – इस पर कोई दबाव नहीं चलता। यह असीम और अनंत होती है - कयामत से कयामत तक। श्री नेवर ने कहा कि दोस्ती किन्हीं भी परिस्थितियों में हो सकती है लेकिन इसके आगे बढ़ने के लिए उद्देश्यों एवं विचारधारा में समानता होना आवश्यक है।

गोष्ठी में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, श्री प्रह्लाद राय अगरवाला, पूर्व महामंत्रीगण श्री भानीराम सुरेका एवं श्री शिव कुमार लोहिया आदि ने भी अपने संक्षिप्त वक्तव्य रखे। महामंत्री श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला, कोषाध्यक्ष श्री कैलाशपति तोदी, सर्वश्री हरिप्रसाद बुधिया, जुगल किशोर जाजोदिया, जगदीशचन्द्र मूँधड़ा, डॉ. जे. के. सर्राफ, बिनोद अग्रवाल, ओमप्रकाश गोयल, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, राजकुमार अग्रवाल, एम.के. गुप्ता, अमित मूँधड़ा, सम्पतमल बच्छावत, गिरधारीलाल पारीक, कान्तिचन्द्र गोयनका, गोपाल अग्रवाल, चेतन मुरारका सहित अच्छी संख्या में समाजबंधु उपस्थित थे।

संगोष्ठी को संबोधित करते श्री गीतेश शर्मा। अन्य परिलक्षित हैं
(बायें से) सर्वश्री प्रह्लाद राय अगरवाला, हरिप्रसाद बुधिया, संतोष सराफ, सीताराम शर्मा, विश्वम्भर नेवर एवं रामअवतार पोद्दार।

नैतिक-सामाजिक मूल्यों का ह्रास, समाज की गिरती साख चिंतनीय : सीताराम शर्मा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा गत १४ सितम्बर २०१९ को सम्मेलन के शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता स्थित मुख्यालय में '**मारवाड़ी की साख - उसकी पहचान**' विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का सभापतित्व सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री संतोष सराफ** ने किया।

अपने स्वागत-वक्तव्य में **श्री संतोष सराफ** ने कहा कि हमारे पूर्वज अपने पारम्परिक मारवाड़ी गुणों का ध्यान रखते थे और अपनी जुबान पर कायम रहते थे। तभी '**न खाता न बही, जो मारवाड़ी कहे वो सही**' जैसी कहावतें अस्तित्व में आयीं। वे सादगी पर जोर देते थे और अपनी चादर से ज्यादा पैर नहीं फैलाते थे, इस कारण उनका मान-सम्मान अक्षुण्ण रहा। आज लोग आडम्बर और फिजूलखर्ची करते हैं, ऋण लेकर भी अपनी औकात से अधिक खर्च करते हैं और फिर अपनी देनदारियों से मुकर जाते है। आज आवश्यकता है कि इस प्रवृति को नियंत्रित करने हेतु कदम उठाये जायें।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं समाजचिंतक **श्री सीताराम शर्मा** ने अपने उद्‌बोधन में खरी नीयत को सबसे महत्वपूर्ण बताया। उन्होनें कहा कि व्यापार में नफा-घाटा स्वाभाविक है किन्तु **यदि नीयत सही है तो न सिर्फ आपकी साख बनी रहेगी अपितु आप अन्ततोगत्वा सफल भी होंगे।** नैतिक एवं मानवीय मूल्यों के ह्रास को चिंता का विषय बताते हुए श्री शर्मा जी ने कहा है कि आज समाज का डर किसी को नहीं रहा। उन्होंने कहा कि सम्मेलन सदैव विचार-विमर्श के माध्यम से सामाजिक समस्याओं के निराकरण का हामी रहा है। सामाजिक प्रश्नों पर लगातार बातचीत होनी चाहिए और लोगों का ध्यान इन विषयों पर लाना चाहिए, उन्हें सजग-सचेत करना चाहिए।

सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, सुप्रसिद्ध उद्योगपति-समाजसेवी **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** ने आडम्बर और फिजूलखर्ची को गिरती साख का मूल बताया। उन्होंने कहा कि लोगों को परामर्श देकर, समझाकर **ऐसी विचारधारा बनानी होगी कि जितनी आय हो, उसी के अनुसार खर्च करें - अपने पड़ोसी, रिश्तेदार, किसी अन्य की तुलना न करें।**

सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता **श्री नंद गोपाल खेतान** ने अपने वक्तव्य में व्यवसाय या कार्यक्षेत्र में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, परिश्रम और गोपनीयता कायम रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि समय के साथ स्थितियों में परिवर्तन आया है। **हम अपने अभिभावकों की बात सुनने वाली आखिरी और अपने बच्चों की बात सुनने वाली पहली पीढ़ी हैं।** उन्होंने सुप्रसिद्ध समाजबंधुओं लक्ष्मीपत सिंघानिया, बसंत कुमार बिड़ला, भगवती प्रसाद खेतान आदि के संस्मरण सुनाये और कहा कि **आज सादगी समय की माँग है।** श्री खेतान ने राष्ट्र की वर्तमान वित्तीय स्थिती पर भी प्रकाश डाला और कहा कि व्यवसाय, और जीवन में भी, आर्थिक अनुशासन का पालन आवश्यक है।

विषय-प्रवर्तन करते हुए संगोष्ठी उपसमिति के चेयरमैन **श्री शिव कुमार लोहिया** ने कहा कि साख मारवाड़ियों की सबसे बड़ी सम्पति है। ब्रिटिश सरकार भी मारवाड़ियों की हुंडी स्वीकारती थी। सादगी एवं सेवाभाव मारवाड़ियों के विशिष्ट गुण हैं जिनकी सराहना महात्मा गांधी ने भी की थी। हमारे पूर्वजों की '**सादा जीवन उच्च विचार**' की जीवनशैली को हमें अपनाये रहना चाहिए।

धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए संगोष्ठी उपसमिति के संयोजक **श्री दिनेश जैन** ने सारगर्भित वक्तव्यों हेतु सभी वक्ताओं का आभार प्रकट किया और कहा कि **परामर्श तथा मंत्रणा के माध्यम से हमें समाजबंधुओं को अपनी साख के विषय में सचेत रखना चाहिए** और समाज की साख बचाने का हर संभव प्रयास करना चाहिए।

संगोष्ठी के प्रारम्भ में राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला, संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका एवं कोषाध्यक्ष श्री कैलाशपति तोदी ने आमंत्रित वक्ताओं का पुष्पगुच्छों से स्वागत किया। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, संयुक्त महामंत्री श्री दामोदार प्रसाद बिदावतका, पूर्वोतर सम्मेलन के अध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकरिया, पश्चिम बंग सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नंद किशोर अग्रवाल, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कमल नोपानी, बिहार सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला, सर्वश्री जगदीशचन्द्र मूँधड़ा, शिव रतन अग्रवाला, रामनाथ झुनझुनवाला, विष्णु कुमार तुलस्यान, आत्माराम सोंथलिया, भानीराम सुरेका सहित गणमान्य समाजबंधु संगोष्ठी में उपस्थित थे।

सम्मेलन की पुरस्कार चयन उपसमिति की बैठक

सम्मेलन द्वारा राजस्थानी भाषा-साहित्य की श्रीवृद्धि हेतु
चेतन स्वामी और पवन पहाड़िया होंगे सम्मानित

डॉ. चेतन स्वामी

श्री पवन पहाड़िया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की पुरस्कार चयन उपसमिति की बैठक गत १९ सितम्बर २०१९ को शेक्सपीयर सरणी कोलकाता स्थित सम्मेलन मुख्यालय में उपसमिति के चेयरमैन **श्री रतनलाल शाह** के सभापतित्व में आयोजित की गई। बैठक में आगामी दिनों दिये जाने वाले **सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा-साहित्य सम्मान** तथा **केदारनाथ-भागीरथी देवी कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल-साहित्य सम्मान** के लिए प्राप्त प्रविष्टियों पर विचार-विमर्श हुआ।

बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संतोष सराफ, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण श्री सीताराम शर्मा एवं श्री नन्दलाल रुँगटा, उपसमिति के संयोजक श्री संजय हरलालका, राष्ट्रीय महामंत्री श्री श्रीगोपाल झुनझुनवाला, श्री आत्माराम सोन्थालिया एवं श्री शिवकुमार लोहिया उपस्थित थे।

उपरोक्त दोनों सम्मानों हेतु प्राप्त आवेदनों एवं अनुशंसाओं पर विस्तृत विचार-विमर्श के बाद, सर्वसम्मति से, श्रीडूंगरगढ, राजस्थान निवासी वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. चेतन स्वामी को सीताराम रुँगटा राजस्थानी भाषा-साहित्य सम्मान तथा नागौर (चूरु), राजस्थान निवासी बाल-साहित्यकार श्री पवन पहाड़िया को केदारनाथ-भागीरथी देवी कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल-साहित्य सम्मान के लिए चयनित किया गया।

बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि आगामी वर्ष से जून तक राजस्थान के पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञप्ति देकर इन सम्मानों हेतु साहित्यकारों के नाम मँगाये जायेंगे ताकि वहाँ के अधिकाधिक साहित्यकारों/साहित्यप्रेमियों को सम्मेलन के द्वारा राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि हेतु दिए जाने वाले इन सम्मानों की सूचना पहुँच सके।

सामाजिक विषयों को प्राथमिकता देकर उठाता रहेगा पूर्वोत्तर सम्मेलन : मधुसूदन सीकरिया

सम्मेलन ने समाज में स्थापित की अमिट पहचान : ओंकारमल अग्रवाल

सम्मेलन का इतिहास आठ दशक पुराना है। अपने स्थापनाकाल से ही सम्मेलन ने समाज से सम्बंधित सभी मुद्दों को प्राथमिकता देते हुए कार्य किया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज में सम्मेलन की अधिक प्रासंगिकता है जिसे समाज ने भी महसूस किया है। यही वजह है कि पिछले एक वर्षों में हजारों की संख्या में समाजबंधुओं ने सम्मेलन की आजीवन सदस्यता ग्रहण की है। एक समय था जब संस्था का सदस्य बनाने के लिए संस्था के पदाधिकारियों को घर-घर जा कर आह्वान करना पड़ता था परंतु आज सम्मेलन के कार्यकलापों को देखते हुए समाजबंधु स्वयं आ कर सम्मेलन की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। उक्त बातें पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन (पूप्रमास) के प्रांतीय अध्यक्ष मधुसूदन सीकरिया ने गत २२ सितम्बर २०१९ को मोरानहाट में आयोजित प्रांतीय कार्यकारिणी समिति की सभा के दौरान कही।

बैठक में प्रांतीय कार्यकारिणी के ४५ सदस्यों के अलावा प्रांत के विभिन्न स्थलों एवं मोरान के लगभग एक सौ समाजबंधुओं एवं महिलाओं ने भी भाग लिया। बैठक के प्रारंभ में आयोजक शाखा द्वारा सभी आगंतुक सदस्यों का अभिनंदन फुलाम गमछा एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर किया गया। शाखा के अध्यक्ष साँवरमल मोर ने स्वागत संबोधन प्रस्तुत किया।

प्रांतीय महामंत्री राजकुमार तिवाड़ी ने खारूपेटिया में संपन्न हुई पिछली बैठक का प्रतिवेदन सभा के सम्मुख प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रांतीय उपाध्यक्ष (मुख्यालय) अशोक अग्रवाल ने पिछली सभा के पश्चात् प्रांतीय इकाई द्वारा सम्पन्न कार्यों की जानकारी दी। प्रांतीय संगठन मंत्री कृष्ण कुमार जालान ने चालू सत्र में नई खुली तीन शाखाओं तथा नए बने लगभग २,५०० आजीवन सदस्यों का विवरण प्रस्तुत किया। प्रांतीय कोषाध्यक्ष संजय कुमार मोर ने वर्ष २०१८-१९ के आय-व्यय की अंकेक्षित रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रांतीय उपाध्यक्षों द्वारा अपने-अपने मंडल की गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत करने के विषय-अंतर्गत मंडल क के उपाध्यक्ष अशोक अग्रवाल (तिनसुकिया), मंडल ख के अनिल केजरीवाल (ज़ोरहाट), मंडल ग के रामेश्वर तापड़िया (लखीमपुर), मंडल घ के ललित कोठारि (नगाँव) ने सभा के समक्ष अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

सभा में एनआरसी के अंतर्गत समाज के लोगों के नाम समाहित होने की वर्तमान स्थिति पर जानकारी देते हुए बताया गया कि अपने समाज के लगभग ९० प्रतिशत लोगों का नाम इसमें समाहित हो चुका है तथा बाकी रहे लोगों का नाम समाहित करवाने में सम्मेलन उनकी यथासंभव मदद करेगा। इस कार्य में अब तक सम्मेलन की शाखाओं द्वारा सक्रियता से किए गए प्रयासों की सभासदों ने खुलकर सराहना की। वर्तमान में असम में जो मुख्य विषय चर्चा में है वह है असम समझौते की धारा छः को क्रियान्वित करना। इस विषय पर सम्मेलन के निवर्तमान प्रांतीय महामंत्री प्रमोद तिवाड़ी ने विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करते हुए बताया कि किस प्रकार इस धारा के लागू होने पर अपना समाज प्रभावित हो सकता है। इस दिशा में सम्मेलन की प्रांतीय इकाई द्वारा नज़र रखते हुए अब तक किए गए कार्यों पर सभासदों ने संतोष व्यक्त किया। सभा में आगामी ४ एवं ५ जनवरी को

(शेषांश - पृः ३१)

With Best compliments From

Anzen Exports
&
Shubham Pharmachem Pvt. Ltd.

DEALER IMPORTER EXPORTER INDENTING AGENT FOR ALL KINDS OF ACTIVE PHARMACEUTICAL INGREDIENTS, PHYTOCHEMICALS, HERBAL EXTRACTS & ESSENTIAL OILS

KOLKATA

Anzen Exports

Regd. Office : 55/3D, Ballygunge Circular Road
Ground Floor, Kolkata-700 019, India

Admn. & Corres. Office :
157, Sarat Bose Road, 2nd Floor
Kolkata-700 026, India
20C, Hazra Road, 1st Floor, Kolkata-700 026, India
Tel : 91-33-2454 9650/51, 91-33-2454 8159
E-mail: info@anzen.co.in Web: www.anzen.co.in

MUMBAI

Shubham Pharmachem Pvt. Ltd.

205-206, Laxmi Plaza, Laxmi Industrial Estate
New Link Road, Andheri (W)
Mumbai - 400 053, India
P : +91 (22) 2635 4800 / 2635 4900
F: +91 (22) 6692 3929 / 2631 8808
Email: shubham@shubham.co.in

To your taste buds, with love...

Refreshingly, yours.

Indulgently, yours.

Addictively, yours.

Spicily, yours.

Healthily, yours.

Nourishingly, yours.

Delightfully, yours.

Obsessively, yours.

Temptingly, yours.

Passionately, yours.

Snackingly, yours.

Yours Tastefully
Anmol™

celebrating 25 years

BISCUITS

www.anmolindustries.com | Follow us on:

Krishi Rasayan Group

29, Lala Lajpat Rai Sarani (Elgin Road),
Kolkata - 700020, West-Bengal, India
www.krishirasayan.com
E-mail: atul@krishirasayan.com
Telephone: +91-33-71081010/11

With more than 50 years of experience in the agro-chemical business and being one of the oldest and leading agrochemical companies of India, **Krishi Rasayan** is touching new heights with each passing day.

The continuous process of upgradation, development and inherent changes according to the market requirements have helped **Krishi Rasayan** become a leader in the domestic circuit. **Krishi Rasayan** is expanding word-wide with exports and overseas registrations focusing on South-East Asia, Africa, Middle-East, CIS and Latin America.

Krishi Rasayan has 8 multi-location manufacturing plants in different parts of India and has 5 overseas subsidiaries.

It also boasts of having contract technical manufacturing units in India manufacturing Pretilachlor, Ethephon, Cypermethrin, Profenofos, Imidacloprid, Thiamethoxam, Metalaxyl, Metribuzin, Acetamiprid, Glyphosate, Tricyclazole, Butachlor, Emamectin benzoate, Difenconazole and Chlorpyriphos.

Additional technical products to be added are under process. The company has technical tie-ups and contract manufacturing with various companies in China and also has an office in Shanghai, China.

The company has many products including formulations such as EC, SC, WDG, SP, GR, EW and CS

Krishi Rasayan specializes in many combination products & bio-products. GLP data are available for most of the products; both 5-batch and 6-pack study.

Insecticides:
Deltamethrin 1% + Triazofos 35% EC, Profenofos 40% + Cypermethrin 4% EC, Ethion 40% + Cypermethrin 4% EC, Chlorpyriphos 50% + Cypermethrin 5% EC, Acephate 25% + Fenvalerate 3% EC, Buprofezin 15% + Acephate 35% WP, Profenofos 20% + Cypermethrin 2% EC, Deltamethrin 2.5% + Permethrin 2.5% EC, and many other forumlations available.

Fungicides:
Metalaxyl 8% + Mancozeb 64% WP, Carboxin 37.5% + Thiram 37.5% DS, Carbendazim 12% + Mancozeb 63% WP, Streptomycin sulphate + Tetracycline hydrochloride (90:10), Iprodione 25% + Carbendazim 25% WP, Cymoxanil 8% + Mancozeb 64% WP, etc

Weedicides:
Metsulfuron methyl 10% + Chlorimuron ethyl 10% WP & other formulations available.

PGR's:
6BA, Amino Acids, Ethephon, Gibberallic Acid, Hydrogen Cynamide, Tricontanol

Bio-Products:
Bacillus thuringiensis var kurstaki 7.5% WP, Trichoderma harzianum 2% WP, Trichoderma viride 1% WP, Pseudomonas fluorescens 0.5% WP, Neem Oil, Azadirachtin, Beauveria bassiana 1.15% WP, Verticillium lecani 1.15% WP and other formulations available.

SERVICES AT A GLANCE

- **Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments**
- **Radiology**
  - Digital X-Ray
  - Ultrasonography
  - Colour Doppler Study
- **Cardiology**
  - ECG
  - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler
  - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
  - Pulmonary Function Test (PFT)
- **Neurology**
  - EMG
  - NCV
  - EEG
- **Gastro Enterology:**
  - UGI Endoscopy
  - Colonoscopy
- **Dental General & Cosmetic**
- **Sleep Study (PSG)**
- **Eye Care Clinic**
- **Ent Care Clinic**
- **Gynae and Obstetric Care Clinic**
- **Consultation with leading Specialists**
- **Physiotherapy**
- **Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep**
- **Comprehensive Health Check-up Programmes**
- **Diabetes Care Clinic**

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 98300 19073, 97481 22475

98300 19073

Consultation | Diagnostics | Dentistry | Health Checks

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

The Apollo Clinic

P-72, Prince Anwar Shah Road, Kolkata-700 045
Email : pashahroad@theapolloclinic.com

संस्मरण

सेठियाजी को पद्मश्री से अलंकरण में सम्मेलन की भूमिका

– सीताराम शर्मा

२० नवम्बर २००३ की बात है। भारत के **उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत** कलकता पधारे थे। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का एक प्रतिनिधिमण्डल - जिसमें मेरे अतिरिक्त **सर्वश्री नन्दकिशोर जालान, मोहनलाल तुलस्यान, दीपचंद नाहटा, इन्दरचन्द सचेती, हरिप्रसाद कानोड़िया, भानीराम सुरेका** एवं **रामअवतार पोद्दार** शामिल थे, ने राजभवन, कोलकाता में उनसे मुलाकात की। मैं उस समय सम्मेलन का राष्ट्रीय महामंत्री था।

पता नही क्यों सभी साक्षात्कार बैठकों में किसी भी पद विशेष पर हुए बिना, जबसे संयुक्त मंत्री बना हूँ, तबसे ही मुझे प्रवक्ता बना दिया जाता रहा है। राजभवन पहुँचने के पहले ही कार में भाई दीपचन्द जी नाहटा (भूतपूर्व राष्ट्रीय महामंत्री) ने मुझसे कहा कि, "चूँकि बात आप ही को करनी है, अपने को उपराष्ट्रपति जी को कन्हैयालाल जी सेठिया को पद्मश्री प्रदान करने के लिये राजी करना है।" यह कहते हुए

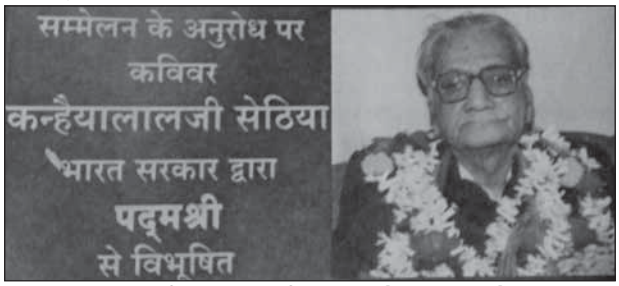

समाज विकास फरवरी २००४ के मुखपृष्ठ से।

नाहटाजी ने मुझे याद दिलाया कि आप ही ने तो मुझे बताया था कि उपराष्ट्रपति पद्म पुरस्कार कमिटि के अध्यक्ष होते है। हम सभी जानते थे कि दीपचंद जी के साथ कन्हैयालाल जी के बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं। इसके अतिरिक्त कविवर कन्हैयालालजी के प्रति सम्मेलन का अपार श्रद्धाभाव रहा है। इसलिये उनको पद्म पुरस्कार से सम्मानित करने में मारवाड़ी सम्मेलन का तनिक भी योगदान हो, इससे अधिक खुशी की बात नहीं हो सकती थी।

उपराष्ट्रपति जी को राष्ट्रीय महामंत्री के रूप में आसन्न १५वें राष्ट्रीय अधिवेशन, जो ९, १० एवं ११ जनवरी २०१४ को मुंबई में आयोजित किया जा रहा था, के उद्घाटन के लिये आमंत्रित करना था, अतः मैने पहले उन्हें निमंत्रण दिया एवं उनकी स्वीकृति के लिये प्रार्थना की। तत्पश्चात् मैंने उनसे मनीषी कन्हैयालालजी सेठिया को पद्मभूषण से अलंकृत करने का अनुरोध किया। **मुझे स्वाभाविक रूप से सेठियाजी के विषय में कुछ कहना नहीं पड़ा, भैरोसिंहजी ने स्वयं उनके अनुदान की चर्चा की।**

अचानक उपराष्ट्रपति जी ने कहा, आप लोगों ने देरी कर दी, समय बहुत कम है। आप तुरन्त सेठियाजी का जीवन परिचय, उनकी पुस्तकें, काव्य रचनाएँ सभी मेरे पास तीन दिन के अन्दर भिजवायें, साथ ही राजस्थान सरकार से भी अनुशंसा पत्र मँगाकर भिजवाने को कहा। पद्म पुरस्कारों पर विचारार्थ अगली एवं अन्तिम बैठक अगले सप्ताह ही है।"

राजभवन में लिफ्ट में उतरते-उतरते हमने कार्य का विभाजन कर लिया। अधिकतर जिम्मेवारी दीपचंद जी नाहटा ने ली कि वे सेठिया जी काव्य रचनाएँ, ग्रन्थ आदि मँगवाकर इकट्ठा कर लेंगे एवं दिल्ली, आवश्यक हुआ तो पत्रवाहक को भेजकर, तीन दिन के भीतर उपराष्ट्रपति कार्यालय भिजवा देंगे। मेरे जिम्मे था सम्मेलन की तरफ से निवेदन पत्र तैयार करना एवं राजस्थान सरकार से अनुशंसा पत्र की व्यवस्था करना एवं सभी ग्रन्थों को प्रेषित करने के उपरान्त उप-राष्ट्रपति कार्यालय से सम्पर्क कर प्राप्ति का अनुमोदन करना।

प्रभुकृपा से सभी कार्य तीन दिन के अन्दर ही हो गये। उपराष्ट्रपति जी के विशेष सचिव ने न केवल प्राप्ति को कन्फर्म ही किया, विशेष अनुरोध करने पर उपराष्ट्रपति जी से मेरी बात भी करवा दी। वे बहुत खुश हुए कि हमने सभी कार्यवाही इतनी शीघ्रता से करवा दी और उन्होंने हमारे अनुरोध पर विचार करने का आश्वासन भी दिया। अगले वर्ष ही यह **सम्मेलन के लिये गौरव की बात रही कि २००४ के गणतंत्र दिवस के अवसर पर श्री कन्हैयालाल जी सेठिया को पद्मश्री से अलंकृत किया गया।** बाद में दीपचन्दजी नाहटा ने एक बार मुझसे पूछा कि आपने तो पद्मभूषण के लिये पत्र में अनुरोध किया था। मैंने कहा कुछ बड़ा माँगा था, मिल जाता तो सोने में सुहागा होता, लेकिन मैं समझता हूँ कि सेठिया जी पद्मभूषण के अधिकारी थे। सेठिया जी को पद्म पुरस्कार पहले ही मिलना चाहिये था, लेकिन इस दिशा में मारवाड़ी सम्मेलन की किंचित भी भूमिका रही, वह हमारे लिये गौरव की बात थी। उनका गीत 'धरती धोरां री' राजस्थान ही नहीं, मारवाड़ी समाज का अमर, जनगण का राष्ट्रीय गीत है।

सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडल के साथ श्री शेखावत।

कविश्रेष्ठ, साहित्य मनीषी, पद्मश्री कन्हैया लाल जी सेठिया की स्मृति को नमन्।

मन्त्रद्रष्टा मनीषी – कविवर कन्हैयालाल जी सेठिया

– डॉ. शिव ओम अम्बर

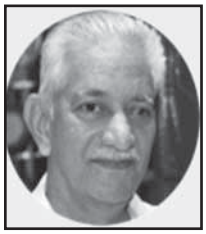

हमारे शास्त्र वाणी के चार रूपों की चर्चा करते हैं – वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती और परा। वैखरी वाणी दैनन्दिन जीवन की सामान्य अभिव्यंजना है। मध्यमा में भाषा की विविध शब्द-शक्तियाँ परिलक्षित होती हैं और वह वक्तव्य को कविता में ढालने वाली वाणी है। पश्यन्ती मानवीय प्रतिभा के चरम उत्कर्ष की अति प्रभावमयी अभिव्यक्ति है जो कवि को ऋषि के आसन पर प्रतिष्ठित करती है और उसे मन्त्रद्रष्टा की भूमिका में उपस्थित करती है। परा वाणी भगवद्वाणी है। विश्रुत महाकवि कन्हैयालाल जी सेठिया का विराट कर्तृत्व और अभिनन्दनीय व्यक्तित्व बड़े-बड़े ग्रन्थों से भी पूर्णतः विवेचित नहीं हो सकता किन्तु एक छोटे-से आलेख द्वारा भी अप्रमेय मनीषा के क्षीरसागर की कुछ बूँदों का आचमन तो किया ही जा सकता है। प्रस्तुत प्रयास ऐसा ही एक विनम्र प्रयास है।

अपने विराट सृजन–संसार में कविर्मनीषी सेठिया जी ने "अनाम" और "प्रणाम" की विविध रचनाओं में प्रज्ञा के हिमशिखर पर लगी भाव-समाधि मे उच्चरित अमृत चैतन्य का अवदान दिया है। इन्हें पढ़ना चिन्तन के चैत्यमें प्रवेश करना है, इनकी भावन-अनुभावन साधना के गहन रहस्यों का उद्घाटन और इनका पाठ एक अनिर्वचनीय आनन्द का आस्वादन है। यहाँ कुछ पंक्तियों को उद्धृत करना समीचीन होगा।

"प्रणाम" की प्रारंभिक पंक्तियों में ही विराम के रूप में आभासित होती गति को ही उत्कृष्टता का मापदण्ड मानते हुए क्रिया के निष्क्रियता में परिणत होने को समता प्रतिपादित किया गया है –

गति का है उत्कर्ष यही, वह
बन विराम–सी दीखे।
त्वरित घूमता चक्र, दृगों को
ठहरा–सा लगता है,
किन्तु क्रिया की निष्क्रियता में
परिणति ही समता है।
अलख रहेंगे नखत, उषा यदि
बन न शाम–सी दीखे।

श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्रीकृष्ण ने जिस अकर्म–भाव को विश्लेषित किया है और प्रज्ञा की स्थिरता की जो देशना भगवान बुद्ध ने प्रज्ञा पारमिता शब्द का प्रयोग करके तथा भगवान श्रीकृष्ण ने प्रतिष्ठिता प्रज्ञा की तरफ इंगित करके की है, "प्रणाम" के कवि की भाव धारा उसे ही गा रही है–

कर्त्ता बनता सिद्ध कर्म ही
जब अकर्म बनता है,
मुक्ति नहीं कुछ और मात्र वह
प्रज्ञा की थिरता है।
अहम भावना वही महत् है
जो प्रणाम–सी दीखे।

वस्तुतः स्थितप्रज्ञ, अकर्म में स्थित निष्काम कर्मयोगी, मुक्ति, निर्वाण आदि शब्द एक ही स्थिति के निरूपण के हेतु प्रयुक्त विविध संकेतक हैं। जब वैयक्तिक संज्ञा समग्र सृष्टि के साथ एकात्मकता का अनुभव करते हुए सर्वनाम में समाहित हो जाती है, उद्धत अहम् अनायास प्रणाम बनकर सत्यकाम भी हो जाता है, पूर्णकाम भी। ईशावास्योपनिषद् के प्रथम मन्त्र की तरह प्रणाम की पहली कविता भी कवि का बीज–वक्तव्य है।

"प्रणाम" के कवि के अनुसार गहन वेदना ही परम प्रेरणा की जननी है, उसी में व्यक्ति को ज्योतिपुरुष बनाने की शक्ति अन्तर्निहित है, अतः वह चाहता है कि व्यक्ति सहज–सरल जीवन जिए, अपने छन्द को जड़ निबन्ध न बनने दे, करुणा के द्वारा निर्ग्रन्थ हो और फिर अपने मधु मकरन्द को सर्वत्र लुटाये –

गहन वेदना परम प्रेरणा
की पावन महतारी,
ज्योति पुरुष कर देगी तुमको
पीड़ा की चिनगारी,
बँधकर भी जो खुल–खुल जाये
वह निर्द्वन्द्व तुम्हारा।
कहीं न जाये जड़ निबन्ध बन
कोई छन्द तुम्हारा।

"एकोऽहं बहुस्याम" तथा "वासुदेवः सर्वम्" की औपनिषदिक तथा पौराणिक मान्यता को अपने अनुभूत सत्य की काव्यमयी भाषा में ढाल कर कवि उद्घोषित करता है कि परम हंसत्व को प्राप्त दृष्टि समस्त सृष्टि में एक ही तत्व को ओत-प्रोत पाती है, उसके लिये द्वन्द्वों की भाषा बेमानी हो जाती है –

जो अपने में पूर्ण उसे कब
कोई भेद सुहाता!
यह अपूर्ण के मन की छलना
जोड़ा करती नाता,
परमहंस के लिये न कोई
है चन्दन अंगारा!
चिर असंग के लिये न कुछ है
मेरा और तुम्हारा!
धरती की छाती पर कोई
धारा है न किनारा!
अम्बर की आँखों में कोई
सूरज है न सितारा!

सुभाषितों को काव्य के सार की संज्ञा दी जाती है। "अनाम" की प्रत्येक अभिव्यक्ति एक सुभाषित का व्यक्तित्व रखती है। जीवन की जटिलताएँ, दार्शनिक चिन्तन की उद्भावनाएँ और अध्यात्म-पथ की संकेतिकाएँ इन सूक्तियों में साकार हुई हैं। यंत्र-तन्त्र और मन्त्र की इन परिभाषाओं में एक अक्षर की भी कमी अथवा वृद्धि नहीं की जा सकती –

अक्षर से
क्षर तक की यात्रा
यंत्र!
अक्षर से
अक्षर तक की यात्रा
मन्त्र!

विश्व के इस विराट् संसार में कोई भी हेय नहीं है, कुछ भी अस्वीकार्य नहीं है। लघु से लघु वस्तु की अपनी विशिष्ट सत्ता और महत्ता है। अपने-अपने स्थान पर सब अप्रमेय हैं –

केशर कस्तूरी नहीं
मैली राख
कर सकती है पावन
कनक रजत के
जूठे पात्र!

यह हमारी दृष्टि है जो सृष्टि में विभेदों का सृजन करती है अन्यथा वस्तुतत्व तो अद्वैत है, कवि एक द्वार के माध्यम से जीवन के इस गहन सत्य की सरल व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहता है –

द्वार के लिये
न भीतर है
न बाहर
द्वैत दर्शन में है!

एक ज्वलन्त व्यक्तित्व अपनी जिन्दगी भी सार्थक करता है और मृत्यु भी, जिस प्रकार द्युतिमती चिनगारी की राख विभूति की वन्दनीया संज्ञा को उपलब्ध होती है –

चिनगारी जिये तो द्युति,
मरे तो विभूति!

उपनिषदों की एक बड़ी स्थापना है कि हृदय-गुहा में प्रतिष्ठित आत्म तत्व सदैव निर्दोष है, बाह्य कर्मों का लेप उस पर नहीं चढ़ता। कविता की भाषा में "अनाम" की उद्भावना है –

नहीं गँदला पाती
प्रतिबिम्बों की भीड़
दर्पण का पानी!

यीशु की बलिदान–गाथा प्रमाणित करती है कि अलौकिक प्रज्ञा प्रायः अपने समय में सहज स्वीकृत नहीं होती प्रत्युत अपमानित होती देखी जाती है। किन्तु आत्माहुति के उपरान्त वही सर्ववन्द्या हो जाती है। समय और समाज की इस विड़म्बना को रेखांकित करते हुए कवि–कथन है –

अवतार मरते नहीं मारे जाते हैं
अस्वीकार कर स्वीकारे जाते हैं!

प्रकृति की औदार्यमयी भूमिका को निरूपित कर पाती है कवि की मर्म–स्पर्शिनी दृष्टि जब वह डाल से गिरते परिपक्व फल और डाल से जुड़े अपक्व फलों के मध्य माधुर्य के एक अदृश्य बंधनकारी सूत्र का अनुसंधान कर लेता है –

छोड़ देती है डाल
रसभरे फल का हाथ
किसी और कसैले फल को
मीठा बनाने के लिये!

एक रससिद्ध गीतकार, प्रज्ञा-परिपुष्ट कवि, मनीषा–समृद्ध सूक्तिकार है कविवर कन्हैयालाल सेठिया। उनकी विराट् सर्जना शत-सहस्र उषा–किरणों से अभिषिक्त होने योग्य है। उनकी कुछ आत्मव्यंजक गीति–पंक्तियों के साथ उनकी पावन प्रेरणास्पद स्मृति को प्रणति निवेदित है –

सबके कुशल क्षेम का इच्छुक
सब में सत है मेरी निष्ठा,
सबकी सेवा इष्ट मुझे है
सबकी प्रिय है मुझे प्रतिष्ठा
सबही मेरे सखा बन्धु हैं,
मैं सबके तन की परछाई।
मेरा है सम्बन्ध सभी से,
सबसे मेरी स्नेह–सगाई।

(पूर्वोत्तर सम्मेलन – प्रांतीय कार्यकारिणी की बैठक - शेषांश)

डिब्रूगढ़ में होने वाले प्रांतीय अधिवेशन पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। समाज के विभिन्न वर्गों में एकता स्थापित करने के लिए प्रांतीय इकाई द्वारा किए जा रहे प्रयास की भी सभी ने सराहना की। सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य, निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष ओंकारमल अग्रवाल ने सम्मेलन के उत्तरोत्तर विकास पर खुशी व्यक्त करते हुए इसे समाज के लिए एक शुभ संकेत बताया।

शिलौंग से आए पवन शर्मा ने सम्मेलन के शिक्षाकोष के संदर्भ में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करने का सभापति से आग्रह किया जिसके अंतर्गत श्री सीकरिया ने जानकारी दी कि आगामी २९ सितम्बर को शिक्षाकोष ट्रस्टबोर्ड की मीटिंग गुवाहाटी में बुलाई गई है जिसमें ठोस निर्णय लेने की उम्मीद की जा सकती है। नगाँव शाखा के सक्रिय सदस्य पवन गाड़ोदिया के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने बताया कि गुवाहाटी में समाज की छात्राओं के लिए प्रस्तावित छात्रावास का विषय भी उक्त मीटिंग में निर्धारित किया गया है जिसमें इस बार ठोस निर्णय लेने की उम्मीद है। पिछले दिनों समाज में अपने निकटवर्ती परिजनों के बीच होने वाले वैवाहिक संबंधो पर सम्मेलन की भूमिका के विषय पर भी चर्चा की गयी। इस विषय पर गत दिनों प्रांतीय इकाई के निर्देश पर तिनसुकिया एवं लखीमपुर शाखाओं द्वारा समाज को एकजुट रखने के उद्देश्य से लिए गए निर्णय की भी सभासदों ने प्रशंसा की। सभा के अंत में प्रांतीय महामंत्री राजकुमार तिवाड़ी एवं आयोजक शाखा के मंत्री विरेन अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कवियों के कवि

– बुद्धिनाथ मिश्र

कलकत्ता में हिन्दी-कविता की औकात गमले के फूल से ज्यादा नहीं रही। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के मजदूरों ने तथा राजस्थान से आये व्यवसायियों ने कलकत्ता की जमीन को अपने खून-पसीने से सींचा और उनके उद्यम से यहाँ उद्योग की फसल लहलहायी। मैथिली, भोजपुरी और मारवाड़ी भाषाएँ सुदामा की पोटली में बँधे चावल की तरह आयीं यहाँ। बंगला के साथ हिल-मिल कर फलीं-फूलीं भी। मगर चावल धान की तरह बीज नहीं होता। जिस छिलके को अकिंचन समझकर वे भाषाएँ अपने 'देस' में छोड़ आयीं, उसके बिना वे बंगाल की धरती पर अंकुरित नहीं हो सकती थीं। परिणामस्वरूप, बंगला अंकुरित-विकसित होती रही और मैथिली, भोजपुरी और मारवाड़ी भाषाएँ उसकी मेड़ की हरियाली बनकर सजती रहीं, आने-जाने वालों के पदचिन्ह अंकित करती रहीं अपनी अस्मिता पर। चुपचाप, बिना किसी गिला-शिकवा के। इसीलिए इन तीनों भाषाओं की सम्पर्क भाषा हिन्दी भी मजदूरों और व्यवसायियों की औपचारिक अभिव्यक्ति की भाषा होने के बावजूद कलकत्ता के काव्य-सृजन के क्षेत्र में बंगला से होड़ लेने की स्थिति नहीं बना सकी। जीविका की तलाश में हिन्दी के जो रचनाकार यहाँ आये, वे कुछ ही दिनों में इस यथार्थ से अवगत होकर बनारस-दिल्ली लौट गये। जो रहे, वे बंगला कविता के अल्पप्राण कवियों की चिलम भरने लगे। कलकत्ता की हिन्दी-कविता की औकात भी इसीलिए उससे आगे नहीं बढ़ पायी। श्री कन्हैयालाल सेठिया, पं. छबिनाथ मिश्र और डॉ. चंद्रदेव सिंह को मै इसका अपवाद ही मानता हूँ।

सेठियाजी राजस्थानी और हिन्दी के मूर्धन्य कवि तो हैं ही, नये रचनाकारों के लिए परम वत्सल वटवृक्ष भी हैं। उनकी राजस्थानी कविताएँ राजस्थान के चप्पे-चप्पे में रची-बसी हैं। 'धरती धोरां री' गीत राजस्थानी समुदाय का अद्वितीय उत्सव-गीत है। अपने समय में इस हद तक लोक-जीवन से जुड़ना किसी भी रचनाकार के लिए गौरव और सौभाग्य की बात है। राजस्थान से दूर रहकर भी सेठियाजी वहाँ की लोक संस्कृति, वहाँ की लोक शब्दावली को कस्तूरी मृग की तरह अपनी नाभि में संजोये रहे और उनके मर्मस्थल से निकली कविता दिग्-दिगन्त को सुरभित करती रही। गोस्वामी तुलसीदास की तरह उन्हें भी आसपास का परिवेश पराजित नहीं कर सका। गोस्वामी तुलसीदास की तरह ही वे अपने प्रतिकूल परिवेश के यथार्थ का चित्रण करने के बजाय समय के भोजपत्र पर मन का संसार रचते रहे, जो तुलसी के राम की तरह ही शाश्वत, सुसंस्कृत और प्रेरणादायक है। सेठियाजी की कविता बंगाल के महाप्राण कवियों की कृतियों से होड़ लेती दीखती है।

दूसरी ओर, सेठियाजी भारतीय ऋषियों को परम्परा के तलस्पर्शी विद्वान है। वेद, उपनिषद्, भागवत-पुराण का सार तत्व उनकी वाणी में समाया हुआ है। भारतीय जीवन-दर्शन की जितनी अच्छी परख सेठियाजी को है, उतनी अन्य कवियों को शायद ही हो। इसीलिए जब वे किसी समारोह में बोलते हैं, तो श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। शब्दों पर ऐसा आधिपत्य बहुत कम देखने को मिलता है। भाषा क्या है, पूरा इन्द्रजाल है। पांडित्य और कवित्व में लक्ष्मी-सरस्वती वाला वैर है। जिस कवि पर पांडित्य हावी हो गया, उसका कवित्व अपनी चमक खो देता है। पांडित्य को पचाकर जो कविता प्रकट होती है, वही जन-जन का कंठहार हो पाती है। विद्यापति संस्कृत के प्रकांड पंडित थे। संस्कृत के कई ग्रन्थ भी उन्होंने लिखे। मगर पदावली रचते समय वे इतना सहज-सरल हो जाते हैं कि भैस की पीठ पर बैठकर उनके श्रृंगार गीत गानेवाले चरवाहे और शिवालयों में भाव-विह्वल होकर नचारी गानेवाले भक्तजनों को अपनी पीड़ा, अपनी छवि दीखने लगती है उन काव्य पंक्तियों में। सेठियाजी का पांडित्य कभी उनके कवित्व पर हावी नहीं होता। इसीलिए उनकी कविताएँ धारदार हैं।

इधर के कुछ काव्य-संग्रहों में सेठियाजी की कविता सूत्र के रूप में आयी है। एक-एक शब्द एक-एक बिम्ब है। एक-एक कविता एक-एक दर्शन है। इन कविताओं में रचनाकार की उदास अभिव्यंजना-शक्ति दृष्टिगोचर होती है। प्रत्येक व्यक्ति का अस्तित्व कदली-स्तम्भ की तरह परतदार होता है। 'नेति नेति' कहते हुए मनीषी जब बाहरी परतों को चीरते हुए भीतर की ओर आगे बढ़ता है, तब अंतर्यात्रा का ऐसा भी पड़ाव आता है, जहाँ बड़े-बड़े शक्तिशाली शब्द हिमालय यात्रा में उत्तरोत्तर गिरते भीम-अर्जुन की तरह शिथिल हो जाते हैं। शब्दों की झोली जितनी हल्की होती है, अन्तस् की यात्रा उतनी ही सुगम होती है। सेठियाजी की इधर की कविताएँ उसी अन्तर्यात्रा के पाथेय हैं। पाणिनि के सूत्र की तरह वे व्यापक अर्थ अपने भीतर समेटे रहती हैं। हिन्दी काव्य-जगत् में इनका विशिष्ट स्थान है। इन कविताओं के कारण सेठियाजी 'धरती धोरां री' के लोककवि से ऊपर उठकर 'कवियों के कवि' बन गये हैं।

मेरा सौभाग्य है कि सेठियाजी की वत्सल स्नेह-छाया कलकत्ता आते ही मुझे मिली और पिछले पंद्रह वर्षों में मुझे इस रचनाकार को बारीकी से समझने का अवसर मिला है। सरकारी नौकरी और कवि सम्मेलन की अस्त-व्यस्तता के बावजूद यदि यह महानगर मुझे रास आया, तो उसका एक आकर्षण सेठियाजी भी हैं। इस उम्र में आकर सामान्यतः रचनाकार आत्म-केन्द्रित हो जाते हैं। मगर सेठियाजी को न केवल मेरी रचनात्मक प्रगति की चिन्ता है, बल्कि बाल-बच्चों के स्वास्थ्य और उनके विकास की भी चिन्ता रहती है। महानगर के परम व्यावसायिक जीवन में ऐसे अभिभावकत्व गुणसम्पन्न रचनाकार बिरले ही मिलते हैं।

गीता में श्रीकृष्ण ने जब अपने लिए 'स्रोतसामस्मि जाह्नवी' (नदियों में मैं गंगा हूँ) कहा, तो इसका अर्थ यह नहीं कि उन्होंने यमुना के तटपर बीते बचपन के दिनों को भुला दिया। यमुना उनके अंदर प्रवाहित होती थी और राष्ट्रीयता की प्रतिमूर्ति गंगा उनके बाहर। सेठियाजी के अंदर भी मातृभाषा की यमुना उतनी ही सरसता के साथ प्रवाहित है जितनी राष्ट्रभाषा की जाह्नवी। उन्होंने मुझे बार-बार अपनी मातृभाषा मैथिली में भी लिखते रहने की प्रेरणा दी। वे उस सुमन की तरह है जो सारे भुवन को पूजता है, मगर कभी किसी से अपनी पूजा की अपेक्षा नहीं करता। ऐसे कालजयी रचनाकार को बार-बार वंदन, सहस्रवार वंदन।

Kanoria Foundation
WORK WITH DEVOTION

HAPPINESS COMES IN MANY COLOURS. FIND YOURS IN THE Happy Rainbow Box.

SREI
Together We Make Tomorrow Happen

Srei, since three decades, has been in the business of financing infrastructure, developing projects and empowering entrepreneurs. Our Happy Rainbow Box is a collection of such happy and optimistic thoughts that have the potential to change the world for the better.

Infrastructure Project & Equipment Finance | Medical, IT, Agriculture & Mining Equipment Finance | Infrastructure Project Advisory, Development & Investments | Investment Banking | Insurance Broking

Log on to www.happyrainbowbox.com and #SpreadTheHappy

L&K | SAATCHI & SAATCHI

ISO 9001 Certified
ORR TECHNOLOGY
SKIPPER
PIPES
"FIXED FOR LIFE"
COMPLETE RANGE OF PIPES & FITTINGS
CPVC | UPVC | SWR | UGD | HDPE | BOREWELL | AGRICULTURE
www.skipperlimited.com | Toll Free : 1800 120 6842

With Best compliments From

M/s. A. P. Credit Pvt. Ltd.

3/1, Dr. U. N. Brahmachari Street

Kolkata-700017

Ph: 033-22871221/1224

S R RUNGTA GROUP
R
Rungta Mines Limited
Chaibasa
RUNGTA STEEL TM
SOLID STEEL
• Superior Technology
• Greater Strength
• Extreme Flexibility
500D
TMT REBARS
STEEL DIVISION
RUNGTA CHAMBERS
S.M.H.M.V. COMPLEX, CHAIBASA -833201
WEST SINGHBHUM, JHARKHAND, INDIA
Contact :
+91-6582-255261/ 361
+91-7008-012240
tmtmkt@rungtamines.com
csp@rungtamines.com
Approved by IS 1786:2008
ISI
Lic.No.-CM/L 5800021706
Approved by IS 2830:2012
ISI
Lic.No.-CM/L 5800007712

महाप्राण का अक्षरबोध भूख से भगवान तक

– डॉ. भानीराम

कविवर श्री कन्हैयालाल सेठिया की सभी काव्य-कृतियाँ अद्वितीय रत्न-मंजूषाएँ हैं। जिनमें ज्ञान, दृष्टि और चरित्र के रत्न भरे हैं। यह कह पाना कठिन है कि महामनीषी श्री सेठिया कवियों में एक सौम्य संत है या संतों में एक उर्ज्जस्वी कवि हैं। परन्तु उनकी सारी रचनाओं में एक महाप्राण चेतना के दर्शन होते हैं जो एक ओर युगीन यथार्थ की विभीषिका को रूपायित करती हैं, तो दूसरी ओर ऐंद्रिय-प्रतीत्याभास के पार खड़े अक्षर की तरफ मानवीय चेतना को संक्रमण का आह्वान देती हैं। भूख की कराल निर्ममता से आत्मा की वैश्विक अनुकम्पा तक जीवन की समग्रता को कवि ने 'स्व' में 'सर्व' के रूप में प्रतीत किया है तथा चेतना के उस अनाहत नाद को शब्दों के माध्यम से मानवीय अवचेतन के अन्तर्कक्ष तक संप्रेषित कर पाने में असंभव सफलता प्राप्त की है।

निर्ग्रन्थ का भावपक्ष मानवीय चेतना की सिद्धशिला पर ध्रुव आसीन अमर्त्य चेतन-पुरुष से जुड़ा है जिसके अचल 'स्थिर' से विश्व-मानवता के अध्यात्मिक आत्म-संधान की शताब्दियों - सहस्राब्दियों में फैली अगणित च्युतियाँ जुड़ कर विविध रागिनियों के अगणित स्वरों में गुंजित एक ओंकार बन जाता है।

'निर्ग्रन्थ' में कवि ने जिस अध्यात्म का साक्षात्कार किया है उसकी 'भूमिका सर्वोदय' है तथा 'मीमांसा अनेकान्त'। वह जगव्यापी हिंसा और परिग्रह का मात्र 'नकारात्मक बोध' नहीं है बल्कि संवेदना में गहरे डूबकर की गयी एक 'मौलिक शोध' है। यह यथार्थ की प्रतिक्रिया से उद्‌भूत आदर्श नही है, बल्कि एक भावात्मक प्रतीति है जिसे हम कवि के ही शब्दों में–

'दृष्टि से परे दर्शन
जीवन से परे आत्मा'

– कह सकते हैं। कवि ने णमोकार मंत्र में अध्यात्म की इस सिद्धस्थता को ही सारे धर्मों, संप्रदायों और परम्पराओं से ऊपर उठकर नमन किया है–

केवल नमन उनको
जो अरिहंत
जो संत
भले ही उनका
कोई धर्म
कोई पंथ।

कवि यह जानता है कि मानव के चेतनागत द्वन्द्व में किसी अन्य व्यक्ति या व्यक्तियों के उपदेश तथा उपलब्धियाँ समाहित नहीं कर सकती। उसने स्पष्ट घोषित किया है कि मृत परिभाषाएँ जीवंत को व्यक्त नहीं कर सकतीं, पदातीत के अशब्ध बोध को व्यक्त करने में त्यक्त-कंचुक शब्द नितान्त असमर्थ है तथा समय के संदर्भ में देखते ही सत्य, बदलकर असत्य बन जाता है।

अध्यात्म के संदर्भ में रहते हुए भी कवि ने इस युग की चुनौती मार्क्सवाद को समीक्षित किया है। कवि भूख के कशल सत्य को जानता है तथा उसे प्रखर अभिव्यक्ति भी देता रहा है लेकिन भीड़ से जुड़ने की प्रक्रिया में आदमी के टूटने की शर्त पर भूख का मात्र आर्थिक स्तर पर समाधान उसे विश्व-मानवता पर आसन्न खतरा लगता है, जिसका उसने सशक्त शब्दों में प्रतिकार किया है–

पहुंच पाता है अब
पेट और शिश्न
तक ही
रक्त का दौर!

मानवता की यह आसुरी स्थिति कवि को उतनी ही भयावह दिखाई देती है जितनी अकाल और सामंती शोषण की विभीषिका। जीवन का प्रत्यक्ष यथार्थ भूख और वासना है, लेकिन परम सत्य है 'स्व' में 'सर्व' के संवेदन का अद्वैत साम्य-योग जिसके अभाव में आज का साम्यवाद वस्तुओं का सामूहिक भोग बनकर रह गया है। कवि के शब्दों में–

नहीं हुआ अनुभूत
साम्य का योग
हाथ लगा
अभिव्यक्ति का सत्य
साम्य भोग।

कवि के मंतव्य में मानवता की समस्या का समाधान संवेदना ही है जिसका अथः अनेकान्त है तथा इति सर्वोदय है। शतपथ ब्रह्मण में 'असुर' शब्द की यही व्याख्या मिलती है– **'ते असुरा देहपूजकाः'**। असुर वे है जो शिश्न और उदर की पूजा के सिवाय जीवन में कोई सत्य नहीं देख पाते। यह हमारी आंतरिक भाव-स्थिति है जिसे कोई वाद, राजनीति या समाजनीति परिवर्तित नहीं कर सकती। कवि जानता है कि आदमी को कोई नया मूल्य या प्रतिमान त्राण नहीं दे सकता–त्राण दे सकती है तो केवल 'मूर्च्छा-विमुक्त दृष्टि' जो 'निर्ग्रन्थ' के नायक ने मानवता को दी है–

तुम आये
बांटा बीज मंत्र
'अनुकम्पा'
कहा बन
आत्मा का माली
कर कषाय से
रखवाली।

अनेकान्त और सर्वोदय की दृष्टि से महावीर के अंतःस्वरूप को देखते हुए कवि ने अपने ही राग-द्वेष री गुंजलिका में अनंत काल से जकड़ी विश्व-चेतना को पुरुषार्थ-मय आशा की नयी किरण दी है–

(शेषांश - पृः ३९)

धोरों की धरती का महान रचनाकार – कन्हैयालाल सेठिया

– श्री बंशीधर शर्मा

पद्मश्री और 'राजस्थान रत्न' के रूप में सम्मानित कन्हैयालाल सेठिया अपने विशिष्ट साहित्यिक अनुदान के लिये ख्यातिनाम है। इन्हें राजस्थान का 'रवीन्द्र' भी कहा जाता है। श्री सेठिया एक प्रखर राष्ट्रभक्त, महान लोकसेवक तथा माँ भारती के वरद पुत्र थे। वे संवेदनशील कवि थे। उनके काव्य में देशभक्ति का उच्च भाव था, वहीं पिछड़ों, दलितों व महिलाओं के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा थी। उनकी रचनाओं में प्रकृति का मादक संगीत था तो रूढ़ियों व आडम्बरों पर तीखा प्रहार। अध्यात्म का उत्कृष्ट भाव भी उनके शब्दों की अभिव्यक्ति में झलकता है।

राजस्थानियों के दिलों की धड़कन उनका अमर गीत 'धरती धोरां री' जन-जन की जुबान पर छाया हुया है। 'पातळ'र पीथल' जैसी यशस्वी रचना के सृजनकर्त्ता हैं।

सेठियाजी का जन्म ११ सितम्बर १९१९ ई. को राजस्थान के सुजानगढ़ शहर में हुआ। इनकी माता मनोहरी देवी निष्ठा एवं करुणा की प्रतिमूर्ति थी, वहीं पिताश्री छगनमल कुशल व्यवसायी होने के साथ-साथ एक चिकित्सक व सेवाभावी व्यक्ति थे। कन्हैयालालजी की प्रारम्भिक शिक्षा सुजानगढ़ में हुई और १९३१ ई. में बारह वर्ष की उम्र में वे कलकत्ता आ गये, जहाँ इनके पिताजी का व्यवसाय था। यहाँ इन्होंने अपनी शिक्षा क्रम चालू रखा। वे गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे। खादी पहनना, चरखा चलाना तथा तकली कातना इनकी दिनचर्या में शुमार हो गया। १९३४ में उनका साक्षात्कार जब गांधीजी से हुआ तो उन्होंने अपनी बचत किये हुए चार आने गांधीजी के हाथ पर रख दिये। अंग्रेजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपने आवाज बुलन्द करते रहे। सुजानगढ़ में हरिजन उत्थान के कार्य करने लगे। उनकी पहली राजस्थानी कृति 'रमणिया रा सोरठा' १९४० ई. में प्रकाशित हुई। यह सम्बोधन सूचक काव्य बहुत प्रशंसित रहा। इसमें अपने विदेशी वस्त्र छोड़ खादी अपनाने का भी वर्णन किया है।

चरखो साचो शस्त्र, मिटै गरीबी देश री।
छोड़ विदेशी वस्त्र, रैजी धारौ रमणिया।।

इसी क्रम में १९४१ में आपकी हिन्दी पुस्तक अग्निवीणा प्रकाशित हुई। इसमें आजादी की माँग को बुलन्द किया गया।

चौक तुम्हारे जयनादों से, हल्दीघाटी जाग उठे।
चम्बल की शीतल लहरों में, महाक्रान्ति की आग उठे।।

इन फिरंगी शासकों की क्रूरता के बीच 'पातळ'र पीथल' रचना में अथक लड़ने का संकल्प दोहराया–

राखो थे मूंछ्यां ऐंठ्योड़ी, लोही री नदी बहा द्यूँला।
हूँ अथक लडूंला दिल्ली स्यूं, उजड्यो मेवाड़ बसा द्यूँला।।

सेठियाजी का रचना संसार बहुआयामी है। इसमें सत की आन है, तो पत को पहचानने की चेतना मशाल है। साधना के गहन सोच के साथ उपजे शब्दों में देश-प्रेम, आत्मज्ञान तथा संवेदना का गहरा भाव है। रचनाकार के साथ-साथ जनसेवक होना उनके व्यक्तित्व को मणिकांचन का संयोग ही कहा जायेगा।

सेठियाजी की सहज, सरल भाषा में रची रचनायें जन-जन का हृदयहार बन गयी। प्रकृति का सुहावना चित्रण उनकी रचनाओं में उभर कर आया है। केजड़ो, नीमड़ो, पीपल के पत्ते इनकी रचनाओं में शामिल हैं, अध्यात्म के गहरे समुद्र से उजले मोती निकाल कर सेठियाजी ने समाज को समर्पित किये हैं। इन मोतियों की चमक पीढ़ियों तक जनमानस को आलोकित करती रहेगी। सेठियाजी की रचना कालजयी है, जिसमें परम्परा की सौरभ, जीवन के विभिन्न चित्र और भविष्य की दृष्टि है।

'धरती धोरां री' गीत में राजस्थान की धरा का उजला यशगान समाहित है। 'आ तो सुरगां न सरमावै, ईं पर देव रमण नै आवै, ईं रो जस नर नारी गावै, धरती धोरां री'। देश, परदेश, गांव-गांव, ढाणी-ढाणी, तक इसकी रसीली रागळी की मधुर स्वरों में गूंज सुनाई पड़ती है। 'पातळ'र पीथल' महाराणा प्रताप की वीरता और शौर्य का संदेश देती कालजयी रचना है। जमींदारों के जुल्म में जकड़े किसानों के हृदय की पीड़ा 'कुण जमीन रो धणी' में उजागर हुई है। सन् १९४२ में जब 'भारत छोड़ो आन्दोलन' चल रहा था, उस वक्त आपकी पुस्तक 'अग्निवीणा' रणभेरी की तरह गूँजी। बीकानेर राज्य में इस कृति को लेकर इन पर देशद्रोह का मुकदमा ठोक दिया, जो आजादी के बाद ही खत्म हुआ। सांच कहने में अगर आंच आती है तो कवि वाणी उसमें कुन्दन बन कर सामने आती है। ऐसे ही १९६२ के चीन हमले के समय 'चीन को ललकार' तथा 'रक्त दो' जैसी आपकी जोशीली कविताओं में ओज का उफान है।

सेठियाजी ने छह दशकों तक राजस्थानी, हिन्दी और उर्दू भाषाओं में कवितायें लिखी। आपकी राजस्थानी में १४, हिन्दी में १८ और उर्दू में दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थानी में 'रमणिया रा सोरठो', 'गळगचिया', मींझर, कूं कूं, लीलटांस, 'घर कूंचा, घर मजला', मायड़ रो हेलो, सबद, सतवाणी अघोरी काळ, कक्को कोडको, लीक लकोळिया और हेमाणी रचनायें साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

हिन्दी में वनफूल, अग्निवीणा, मेरा युग, दीपकिरण, प्रतिबिम्ब, आज हिमालय बोला, खुली खिड़कियाँ, चौड़े रास्ते, प्रणाम, मर्म, अनाम, निग्रंथ, स्वगत, देह विदेह, आकाश गंगा, वामन, विराट, श्रेयस, निष्पति और त्रयी। उर्दू में ताजमहल और गुलची छपी है। कुल मिलाकर चौतीस ग्रंथ साहित्य की बड़ी धरोहर है। आपकी कई पुस्तकों का अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला तथा मराठी में अनुवाद हुआ है।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया के बारे में मूर्धन्य मनीषियों के अभिमतों को दृष्टिगत रखते हुये उनके रचना-संसार की परख की जा सकती है। सुमित्रानन्दन पंत जैसे साहित्य मनीषी उनकी रचनाओं के बारे में लिखते है – 'आपकी रचनाओं को पढ़कर स्वतः ही लगता है कि कविता इस युग में मरी नहीं बल्कि और

भी गहन गंभीर होकर जीवन के निकट आ गई है।' डॉ. हरिवंश राय बच्चन कहते है – 'आपकी कविता मंत्र ही है ये छोटे-छोटे सूत्रों मे जीवन का गहन रहस्य।' आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री सेठियाजी की रचनाओं के बारे में लिखते है – 'तुमुल साहित्यिक कलह के कोलाहल में श्रद्धा की ऐसी सहज अभिव्यक्ति, ऐसी नपी-तुली भाषा, ऐसी तन्मयता – यह तो आश्चर्य की बात है। राष्ट्रकवि रामधारी दिनकर, डॉ. रामकुमार वर्मा, जैनेन्द्र, भगवती प्रसाद मिश्र आदि अनेक साहित्य मनीषियों ने सेठियाजी की कविताओं की सरसता, गहनता और दर्शन के बारे में भूरि-भूरि प्रशंसा की है।'

सेठियाजी का पूरा साहित्य समग्र रूप से प्राप्त हो सके, इसका एक सराहनीय प्रयास कोलकाता की राजस्थान परिषद् ने किया है। इन रचनाओं का समग्र रूप से प्रकाशन जुगलकिशोरजी जैथलिया के निष्णात संपादन में हुआ है। भाई महावीर बजाज भी इसके सह सम्पादक है। 'कन्हैयालाल सेठिया समग्र' चार खण्डों में संजोकर प्रकाशन किया गया है। खुशी की बात है कि इस प्रयास से कई लोग सेठियाजी के साहित्य पर शोध कर रहे हैं।

सेठियाजी को कई प्रतिष्ठित सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुये हैं। भारत सरकार ने 'पद्मश्री' से अलंकृत किया है तो राजस्थान सरकार ने 'स्वतंत्रता सेनानी' का ताम्र पत्र भी दिया है। राजस्थान साहित्य एवम् संस्कृति अकादमी ने अपना श्रेय सम्मान 'साहित्य मनीषी' प्रदान कर आपको सम्मानित किया है। ज्ञान पीठ का 'मूर्ति देवी पुरस्कार, हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'साहित्य वाचस्पति' और राजस्थान विश्वविद्यालय ने आपको मानव पी.एच.डी. की उपाधि दी है। इसके अलावा भी आपको समय-समय पर विभिन्न सम्मान मिलते रहे हैं। स्वर्गवास उपरान्त २०१२ में राजस्थान सरकार ने आपको 'राजस्थान रत्न' प्रदान किया है। सेठियाजी का महाप्रयाण ११ नवम्बर २००८ ई. में कोलकाता में हुआ, जहाँ वे पिछले ३५ साल से रह रहे थे। राजस्थानी की मान्यता के लिए उन्होंने जोरदार ढंग से अथक प्रयास किया। उनके सम्पूर्ण जीवन एवं काव्य संसार को उकेरने वाली मेरी 'जय कन्हैया' रचना की पंक्तियाँ है –

सिरै मोड़ नर सबद रो, हीरो कहूं'क लाल।
नर कहूं'क नखतरी, तनै कन्हैया लाल।।

(शेषांश - महाप्राण का.....)

कर देगा तिरोहित
मन्वन्तरों का संचित तम
प्रकाश का एक क्षण
होते हो स्व की स्फुरणा
टूट जायेगी घनीभूत मूर्च्छा
नहीं है गहरी
असत् की जड़
पुरुषार्थ की पकड़ में है
श्रेयस् का पंथ
अनुबंधित है
गति से
मील का अंतिम पत्थर
सिद्धशिला।

मानवता की महायात्रा का अंतिम सोपान यही वीतराग अनुकम्पा है जो 'स्व' में 'सर्व' को संवेदित कर 'पर' से मुक्त हो चुकी है। यह कषाय-मुक्त चेतना ही वह अकाल-पुरुष अच्युत है जिसका लीला-विलास अव्यक्त ऋतम्भरा का महारास बन जाता है।

रच सकते हैं
अच्युत ही
महारास
बंधी हुई है
उनके ही स्थिर से
गोपिकाओं की च्युति
गुंजता है
रागिनियों के वैविध्य में
उनका ही ओंकार
उनका ही ओंकार
व्यक्त है
उनकी ही लीला में
अव्यक्त ऋतम्भरा।

भूलग्या!

कंप्यूटर रो आयो जमानो कलम चलाणीं भूलग्या।
मोबाईल में नंबर रेग्या लोग ठिकाणां भूलग्या।

धोती पगडी पाग भूलग्या मूंछयां ऊपर ताव भूलग्या।
शहर आयकर गांव भूलग्या बडेरां रा नांव भूलग्या।

हेलो केवे हाथ मिलावे रामासामा भूलग्या।
गधा राग में गावणं लाग्या सारेगामा भूलग्या।

बोतल ल्याणीं याद रेयगी दाणां ल्याणां भूलग्या।
होटलां रो चस्को लाग्यो घर रा खाणां भुलग्या।

बे टिचकारा भूलगी ऐ खंखारा भूलग्या।
लुगायां पर रोब जमाणां मरद बिचारा भूलग्या।

जवानी रा जोश मांयनें बुढापा नें भूलग्या।
दम दो हमारे दो आपरा मा बापां ने भूलग्या।

संस्कृति नें भुलग्या खुद री भाषा भुलग्या।
लोकगीतां री रागां भूल्या खेल तमाशा भुलग्या।

घर आयां ने करे वेलकम खम्मा खम्मा भुलग्या।
भजन मंडल्यां भाडा की जागण जम्मा भुलग्या।

बिना मतलब बात करे नीं रिश्ता नाता भूलग्या।
गाय बेचकर गंडक ल्यावे खुद री जातां भुलग्या।

कांण कायदा भूलग्या लाज शरम नें भूलग्या।
खाणं पांण पेराणं भुलग्या नेम धरम नें भूलग्या।

घर री खेती भुलग्या घर रा धीणां भूलग्या।
नुवां नुंवां शौक पालकर सुख सुं जीणां भुलग्या।

'धरती धोरां री' और 'पाथळ'र पीथल' रचनायें अजर-अमर हैं

– डॉ. वसुंधरा मिश्र

रंगीली राजस्थान की संस्कृति शूरता, वीरता और श्रृंगार की धरती रही है। एक और बनास नदी और अरावली की पर्वत श्रृंखला तो दूसरी ओर भयावह चंबल का क्षेत्र और धोरों के टीले। भौगोलिक दृष्टि से कठिन चुनौतियों से भरा राजस्थान योद्धाओं की धरती रहा है। आज से एक लाख वर्ष पूर्व मनुष्य मुख्यतः बनास नदी के किनारे आया था। वहीं से राजस्थान की कहानी की शुरूआत होती है, वर्षों से कई परिवर्तन होते रहे। राजस्थान राणा प्रताप, मेवाड़, हल्दी घाटी, अरावली और राजपूताना आदि का पर्याय है। वस्तुतः राजस्थान एक रियासत है, जहाँ भील और मिनस आदि जनजातियों का प्रभुत्व रहा है। गाडिया लोहार छोटे राजस्थानी राजपूत जनजाति है। मेहर के महाराणा प्रताप की सेना में गाडिया लोहार लोहार थे। धीरे-धीरे समय के साथ वे बंजारों की तरह रहने लगे। सातवीं सदी में पुराने गणराज्य अपने को स्वतंत्र राजा के रूप में स्थापित करने लगे। मोर्यों के समय में चित्तौड़ गुविलाओं के द्वारा मेवाड़ और गुर्जरों के अधीन पश्चिमी राजस्थान का गुर्जरात्र प्रमुख राज्य था। लगातार होने वाले विदेशी आक्रमणों के कारण यहाँ एक मिली-जुली संस्कृति का विकास हो रहा था। उधर सन् ६४७ में राजा हर्ष की मृत्यु के बाद केंद्र में मजबूती नहीं रही। अकबर जैसे मुगल सम्राट ने महाराणा को हराने के लिए सभी प्रयास किए जो इतिहास विदित है। महाराणा प्रताप राजस्थान ही नहीं बल्कि पूरे भारत की शान रहे जिन्होंने अपनी वीरता और शूरता से अपनी मातृभूमि को बचाने के लिए अपने प्राणों को न्योछावर किया। आज १९ देशी राजाओं की रियासतों के राजाओं का सम्मिलन है राजस्थान। लेखक जेम्स टॉड के अनुसार महाराणा प्रताप का जन्म मेवाड़ के कुंभलगढ़ में हुआ था। इतिहासकार विजय नाहर ने राजपूतों के इतिहास के विषय में विस्तार से चर्चा की है। १५७६ के हल्दीघाटी युद्ध में ५०० भीलों को साथ में लेकर राणा प्रताप ने आमेर सरदार राजा मानसिंह के ८०,००० की सेना का सामना किया। शत्रु सेना से घिर चुके प्रताप को मानसिंह ने अपने प्राण देकर बचाया। उस दौरान उनके प्रिय घोड़े चेतक की भी मृत्यु हो जाती है। फिर भी उन्होंने अकबर के सामने घुटने नहीं टेके। अकबर ने उनको हराने के लिए सभी प्रयास किए। यह युद्ध एक दिन का था परंतु उस दिन १७,००० लोग मारे गए। प्रताप की हीलत दिनोंदिन चिंताजनक होती चली गई। भामशाह ने उस समय २५,००० आदिवासिटयों को इतना धन दिया जिससे बारह वर्षों तक उनका गुजारा हो सकता था।

मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप ने अपना पूरा जीवन बलिदान कर दिया जो एक मिसाल है।

प्रताप राजस्थानी साहित्य और संस्कृति के चहेते चरित्र हैं जो पूरे भारत के गौरव हैं।

साहित्यकार और महाकवि कन्हैयालाल सेठिया जी की ये पंक्तियाँ महाराणा प्रताप के मातृभूमि प्रेम की तरह ही अजर-अमर हैं –

धरती धोंरां री
आ तो सुरगा नै सरमावे
इ पर देव रमण न आवे...
ई रो चित्तौड़ो गढ़ लूंठो,
ओ तो रण वीरां रो खूंटो,
ई रे जोधाणूं नौ कूंटो, ... धरती धोंरां री।

राजस्थान के सुजानगढ़ चुरू में ११ सितंबर १९१९ में जन्मे महाकवि सेठिया कलम के सिपाही थे जिन्होंने राजस्थान में सामंतबाद को समाप्त करने के लिए जबर्दस्त मुहिम चलाई और पिछड़े वर्ग को आगे लाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे कराची में थे। १९४३ में सेठिया जी महान नेताओं जयप्रकाश नारायण और राममनोहर लोहिया के संपर्क में भी रहे। राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी पुरस्कार से सम्मानित महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की कलम की ताकत किसी देशप्रेमी रणबांकुरे से कम नहीं थी। वे अपनी कविता "जागो जीवन के अभिमानी" में लिखते हैं –

"लील रहा मधु - ऋत् को पतझर
मरण आ रहा आज चरण धर
कुचल रहा कलि - कुसुम,
कर रहा अपनी ही मनमानी
जागो जीवन के अभिमानी"

भारत के सुदूर पश्चिम में राजस्थान उनका जन्म स्थान रहा और पूर्व में बंगाल उनकी कर्मस्थली रही। दोनों से ही सांस्कृतिक जुड़ाव रहा। स्कॉटिश चर्च कॉलेज, कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कन्हैयालाल सेठिया अपनी भाषा प्रेम के कारण विशेष याद किए जाते हैं।

आधुनिक नवजागरण के प्रवर्तक भारतेंदु हरिश्चंद्र ने "निज भाषा उन्नति अहै सबभाषा को मूल" माना, वहीं कन्हैयालाल सेठिया ने "मायण भाषा" (मातृभाषा) राजस्थानी और साहित्य हिंदी भाषा को समृद्ध किया। कविवर सेठिया जी प्रवासी राजस्थानियों से दुखी रहते थे कि वे अपनी मातृभाषा को भूलते जा रहे हैं। मैं बूंदी राजस्थान की हूँ लेकिन बनारस शिक्षा स्थली और कोलकाता कर्मस्थली और घर है। मेरी भाषा हाड़ौती और शेखावाटी है परंतु बोलने की आदत कम होने के कारण महाकवि सेठिया जी ने मुझे सदैव अपनी भाषा में बात करने के लिए उत्साहित किया। आज लोग अपनी भाषा की अहमियत को समझ रहे हैं। भाषा भारतीय संस्कृति का प्राण है। सेठिया जी कोलकाता में रहते हुए भी अंत तक अपनी भाषा के गौरव के लिए लड़ते रहे।

प्रसिद्ध रचना पाथळ'र पीथल की ये पंक्तियों सेठिया जी के राजस्थानी व्यक्तित्व को उजागर करती हैं, उन्हें अपनी मातृभूमि का कर्ज चुकाने के लिए "सीस" भी कटवाना पड़े तो वह भी कम है, वे कहते हैं –

हूं भूख मरूं हूं प्यास मरूं
मेवाड़ धरा आजाद रवै
हूँ घोर उजाड़ा में भटकूं
पण मन में मां री याद रवै
हूं रजपूतण रो जायो हूँ

रजपूती करज चुकाऊंला
ओ सीस पडै पण पाद्य नहीं
दिल्ली रो मान झुकाऊंला

हल्दीघाटी राजपूताने की वह पावन बलिदान भूमि है जिसके शौर्य एवं तेज की भव्य गाथा से इतिहास के पन्ने रंगे हैं। राजपूत वीरों का तेज और महाराणा का लोकोत्तर पराक्रम इतिहास में प्रसिद्ध है। संवत् १६३३ विक्रम संवत में मेवाड़ के हल्दीघाटी का कण-कण लाल हो गया था। अपार शत्रु सेना के सामने थोड़े से राजपूत और भील सैनिक कब तक टिकते? महाराणा को पीछे हटना पड़ा और उनके प्रिय घोड़े चेतक को भी मृत्यु का मुँह देखना पड़ा।

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया ने महाराणा के स्वतंत्रता संघर्ष को उपमाएँ दी हैं जो इतिहास को भी चुनौती देती हैं। प्रताप ने अपनी मातृभूमि और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए भौगोलिक स्थितियों की दुरूह कठिनाइयों को झेला, कभी भी अकबर के सामने नहीं झुके। कवियों ने प्रताप की इसी वीरता और शूरता के गीत गाए। प्रताप ने २२ हजार राजपूतों में विश्वास रखा और हल्दीघाटी को भी अमरता प्रदान की। हल्दीघाटी वही स्थान है जहाँ युद्ध हुआ। कई ऐतिहासिक मत हैं जिनकी चर्चा यहाँ करना नहीं है। विभिन्न कवियों ने अपनी-अपनी कल्पना और सामाजिक अनुभवों, संवेदनाओं को अपनी लेखनी में आबद्ध किया जो एक तरह से कवि का राजस्थान के प्रति शूरता, वीरता, आन-बान-शान और देशभक्ति का प्रतीक हैं। वीर रस काव्य के सुविख्यात कवि श्यामनारायण पांडेय (सन् १९०७-१९९१) गायक भी थे। "हल्दीघाटी" जैसी प्रसिद्ध रचना आज भी सबको रोमांचित कर देती है। अरावली पर्वतमालाओं में खमनोर एवं बलीचा गांव के बीच हल्दीघाटी एक पहाड़ी दर्रा है जहाँ शहीदों की स्मृतियों में छतरियाँ बनी हुई हैं। दर्रे में हल्दी रंग की मिट्टी होने के कारण हल्दीघाटी नाम पड़ा।

सेठिया जी ने राणा की पीड़ा को उनके पुत्र के हाथों से बिलाव का घास की रोटी छीन कर ले जाने से किया जो इतिहास नहीं कवि का सृजन है। "अरे घास री रोटी" की कल्पना मात्र साहित्यिक कल्पना है। 'पातळ'र पीथल' में वे लिखते हैं –

"अरे घास री रोटी ही जद
बन बिलावड़ो ले भाग्यो
नान्हो सो अमरयो चीख पड्यो
राणा रो सोयो दुख जाग्यो।
जद याद करूं हळदीघाटी
नैणां में रगत उतर आवै
सुख दुख रो साथी चेतकड़ो
सूती सी हूक जगा ज्यावै।

राजकुमार अमर सिंह के हाथ से बनविलाव द्वारा घास की रोटी छीनने का ये सच। महाराणा के स्वतंत्रता संघर्ष की कई उपमाएँ दी गई हैं जो इतनी मार्मिक हैं कि उनके प्रमाण इतिहास में ढूँढ़ने का विषय बन गए हैं। १७ वर्षीय प्रताप का पुत्र अमर सिंह राजपूती है जो शेर और हाथियों का मुकाबला करने में सक्षम है तो भला एक बनविलाव ऐसा करने की हिम्मत भी नहीं कर सकता। यह मात्र साहित्यिक कल्पना है। राजस्थान के पुत्र तो रणबांकुरे होते तभी तो कवि कहते हैं –

माई एहडा पूत जण
जेहडा राण प्रताप
अकबर सूतो ओधकै
जाण सिराणे लोप।

महाराणा तो अपने देश के लिए चिंतित हैं–

फूलां री कंवली सेजां पर,
वै आज रूलै भूखा तिसिया,
हिंद वाणै सूरज रा टाबर,
आ सोच हुई दो टूक तड़क,
राणा री भीम बजर छाती

मातृभूमि पर मर-मिटने वाले अलग ही मिट्टी के बने होते हैं वे स्वयं मिट सकते हैं लेकिन देश की आन पर आँच नहीं आने देते–

राणा री पाघ सदा ऊंची
राणा री आण अटूटी है

राणा दर-दर भटक सकते हैं, ठोकर खा सकते हैं, प्यासे मर सकते हैं, भूख से बिलबिला सकते हैं लेकिन उस समय भी केवल मातृभूमि के प्रति मस्तिष्क में प्रेम ही रहता है–

सेठिया की दृष्टि भी सदैव अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों के प्रति जागरूक रही। अरावली की पर्वत-श्रृंखलाएं भी पूरे भारत देश के लिए प्रेरणादायक है जहाँ कभी जीवन पुष्पित और पल्लवित हुआ था। मेवाड़ का गौरवशाली इतिहास रहा है। 'अग्निवीणा' में कवि कहते हैं–

देख आज मेवाड़ मही को
आडावल की चोटी नीली
उसकी बीती बात याद कर
आज हमारी आंखें गीली।
जिसके पत्थर-पत्थर में भी
जयनादों की ध्वनि टकराई,
जहाँ कभी पनपा था जीवन
वहाँ मरण की छाया छाई

सत्य और असत्य को इंगित करते हुए कवि कहते है–

फूल विहंसता, शूल मौन है
एक डाल के दोनो साथी
दोनों को ही हवा झुलाती
फूल झरेगा, शूल रहेगा,

सत्य कौन है? भूल कौन है? साहित्य जगत में कवि पृथ्वी राज राठौड़ ही पीथल हैं और पातल का प्रयोग पार्थ या कृष्ण के रूप में हुआ है। कर्नल टॉड ने ग्रंथ राजस्थान का पुरातत्व इतिहास, अकबरनामे में इनका जिक्र आता है। पीथल अकबर के दरबार के प्रसिद्ध कवि और योद्धा दोनों थे लेकिन प्रताप के प्रशंसक भी थे। अकबर किसी भी तरह से प्रताप को हराना चाहते थे। शत्रु पक्ष के होते हुए भी पीथल पत्र में प्रताप को उनके स्वाभिमान और वीरता की याद दिलाते हैं। पद्मश्री से सम्मानित श्री कन्हैयालाल सेठिया जी की १०० वीं जयंती पर उनकी रचनाएँ ही उनकी आत्मा है। 'धरती धोरां री' और 'पाथळ'र पीथल' रचनाएँ अमर हैं, कालजयी हैं। जब तक भारतवर्ष है तब तक शब्दों में जड़े उनके मोती शस्यश्यामला धरती को ऊर्जावान बनाते रहेंगे। राजस्थान के रवीन्द्र नाथ टैगोर कहे जाने वाले सेठिया जी के दार्शनिक भावों और संवेदनशीलता को शत-शत नमन!

संवेदना के सागर : महाकवि कन्हैयालाल सेठिया

– जुगल किशोर जैथलिया

संवेदना के सागर थे महाकवि कन्हैयालाल सेठिया। देश के प्रति, समाज के प्रति, प्रकृति के प्रति और प्राणिमात्र के प्रति उनके हृदय में संवेदना की लहरें प्रवाहित होती रहती थी, इसी कारण वे जितने बड़े कवि थे, उतने ही बड़े लोक सेवक भी थे अद्‌भुत था उनके जीवन में यह मणिकांचन संयोग। इसी संवेदना के कारण उन्होंने अपनीकृतियों में जीवन के हर पहलू को छुआ है। आपके काव्य में देशभक्ति का उत्कट भाव है, पिछड़ों-दलितों-बंचितों एवं महिलाओं को उठ खड़े होने की हुंकार है, रूढ़ियों पर तीव्र प्रहार है, प्रकृति के राग-रोगन का अनूठा वर्णन है। आध्यात्म के अभ्यन्तर स्वरूप की सहज व्याख्या है और इन सब की अभिव्यक्ति में शब्दों का सहज एवं अभिनव चयन है।

१९६९ ई. में १७ वर्ष की उम्र से जब से उन्होंने कलम उठाई, उनके गीत लोगों का कण्ठहार बन गए। विदेशी दासता के विरुद्ध उठ कर खड़े रहने के लिए उन्होंने 'पातळ'र पीथल' गीत के माध्यम से प्रताप का शौर्य बखानते हुए बिना झुके और बिना रुके आजादी की लड़ाई लड़ते रहने का आह्वान किया है –

मैं झुकूं कियाँ? है आण मनैं कुल रा केशरिया बानां री,
मैं बुझूं कियां? हूँ सेस लपट आजादी रै परवानां री।

जमींदारों के अत्याचारों के विरुद्ध किसानों का पक्ष लेते हुए उन्होंने 'कुण जमीन रो धणीं?' गीत लिखते हुए पूछा कि जमीन का असली मालिक कौन है? - अत्याचारी जमींदार या मेहनतकश किसान?

कुण जमीन रो धणी?
हाड़ मांस चाम गाळ, खेत में पसेव सींच
लू लपट ठंड मेह, सै सवे दांत भींच।
फाड़ चौक कर करै, जोतणी'र बोवणी,
बो जमीन रो धणी क, ओ जमीन रो धणी?

इसी कालखंड में लिखा गया राजस्थान की यशोगाथा कहनेवाला गीत 'धरती धोरां री' तो पूरे राजस्थान एवं राजस्थानी का प्रतिनिधि गीत बन गया और आज भी पूरे विश्व के राजस्थानी समाज के हर उत्सव का प्राणगीत बनता है। '**वरिष्ठ साहित्यकार बालकवि बैरागी का कहना है कि सेठियाजी अगर और कुछ न लिख कर यही गीत लिखते तो भी वे अमर हो जाते। यह गीत बैसा ही है जैसा ऋषि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय का बन्देमातरम् एवं इकबाल का सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।**'

१९४२ ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन के अवसर पर प्रकाशित 'अग्निवीणा' तो मानो देशभक्ति के गीतों की मशाल हो। इसके कतिपय गीत जैसे – 'अग्निवीणा झनझना दो, आज बज उठी है रणभेरी', 'आज पड़ा माँ पर संकट' प्रभृति ने लोगों को इतना दीवाना बना दिया कि इस पुस्तक पर बीकानेर राज्य की ओर से देशद्रोह का मुकदमा ठोका गया जो आजादी के बाद ही खत्म हुआ। एक बानगी देखें :-

आज हमारी रग-रग में है, महाप्रलय की बिजली दौड़ी।
अब न अधिक अन्याय सहेंगे, हमने युग की रासें मोड़ी।।

१९६२ ई. में चीनी आक्रमण के समय आपने 'चीन को ललकार' एवं 'रक्त दो' नामक दो लघु पुस्तिकायें लिखीं जिनमें क्रमशः १३ एवं ११ जोशीली कविताएँ थी। बानगी देखें :

'पहरुए जननी की जय बोल।
सुन हो जिसे दिशायें बहरी, डूबे बैरी की रणभेरी,
आज देश की हदें हड़पने, निकले हैं मंगोल! पहरुए....।।
पंचशील की खाल ओढ़कर, बन्धु बना था जो पशु बर्बर,
वही चाहता चीन बदलना, भारत का भूगोल।। पहरुए....।।
उठो हिन्दियों आज काल की, खुली चुनौती झेलो,
आँगन में आए अरिदल को, सीमा पार धकेलो।'

ये दोनों ही पुस्तिकायें सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर व्यापक रूप से प्रचारित हुई। यह लेखन का क्रम २००१ ई तक लगातार सात दशक तक अबाध चलता रहा।

१९८० के दशक के बाद की सभी रचनायें मुख्यतः आध्यात्मपरक एवं दर्शन प्रधान है। इन रचनाओं में भारतीय दर्शन की विशिष्टता और वेदान्त की निगूढ़तम अनुभूतियों को जिस सरल, सरल एवं हृदयग्राही तथा कम से कम शब्दो में अभिव्यक्ति किया है वह चिन्तकों एवं साधकों की जिज्ञासाओं एवं शंकाओं का शमन करने एवं दिशाबोध देने में समर्थ है। निर्ग्रन्थ में तो उन्होंने मार्क्स की एकांगी दृष्टि को आड़े हाथों लेते हुए कहा है :

'नहीं हुआ अनुभूत साम्य का योग,
हाथ लगा केवल साम्य भोग।'

मर्म एवं अनाम में उनकी मंत्रवत् दार्शनिक उक्तियाँ सीधे हृदय को छूती हैं :

नर बन नारायण स्वर बन रामायण। (मर्म)
मरूँगा/सब की तरह/ जीवूंगा अपनी तरह। (नाम)

साहित्य सृजन के साथ-साथ आप बहुत बड़े लोकसेवक भी थे। बाल्यकाल से ही आपने हरिजन शिक्षा एवं जातिगत भेदभाव मिटाने हेतु बहुत संघर्ष किया। आपने अपने घर में ही १९४० ई. में हरिजनों के लिए विद्यालय प्रारंभ किया एवं बाद में राजकीय विद्यालय की भी स्थापना करवायी। साथ ही रोजगार सृजन हेतु महिलाओं के लिए सिलाई एवं पुरुषों के लिए भी रोजगार मूलक प्रशिक्षम प्रारम्भ किये। अपने बड़े पुत्र के विवाह की बारात में हरिजनों को शामिल कर एक आदर्श स्थापित किया। उस कालखंड में ऐसा करना बहुत बड़े साहस का काम था। इसके अलावा देश भर में बीसियों अस्पताल, छात्रावास, महिला विद्यालय, स्वास्थ्य-केन्द्र, संस्कार केन्द्र तथा बाल केन्द्रों की स्थापनी भी आपके मार्गदर्शन एवं सहयोग से हुई। कार्यकर्ताओं के सुख-दुःख में आप सहज शरीक होते थे एवं उनकी पितातुल्य सम्हाल रखते थे। इतने पर भी आप अर्थ-व्यामोह से सदैव दूर रहे। इस क्षेत्र में भी आप विरल थे। यद्यपि उनका पार्थिव शरीर आज नहीं है पर वे अपने काव्य के माध्यम से सदैव हमारे बीच में उपस्थित रहेंगे।

कुछ रचनाएँ सेठियाजी की हस्तलिपि में

सबद

१

धरती कागद हल कलम
बिरखा मसि रो नीर,
बाया आखर बीज जद
सबद उग्या गंभीर

२

गरज सरै के भीड़ स्यूं
होवै मिनख रो काम,
बसै न दिवलो लाख स्यूं
तूली आवै काम

३

दोष दिखै जे और में
निज रो दोष पिछाण,
कद देख्यो कालूंस नै
भुवन दीपतो भाण ?

४

सुघड़ देह रो कुंभ है
पण इन्द्रयां रा छेज,
ऊरजा रो अमरित ढुलै
संजम पाण सहेज

निरर्थक आशंका!

शूली पर है
कुंआरे सत्य की
प्रिया की सेज,
करेगी अहिंसा की-
सम्पूर्णता को
परिभाषित
तमंचे की गोली
देगा विश्वास को
अखंडता का
प्रमाण पत्र
कालकूट का स्वर्ण पात्र.
व्यर्थ
घबराते हो
तुम तो मित्र
नहीं पहुंचा है
तुम्हारा सत्य
तुम्हारी-अहिंसा
तुम्हारा विश्वास
अभी उस
पराकाष्ठा पर
जब कि
देगा तुम्हें कोई
शूली, गोली या कालकूट!

31.3.87

देव-स्तुति

[गतांक से आगे]

– डॉ. जुगल किशोर सर्राफ

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः।
अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणं।।

परमेश्वर तो भगवान् श्रीकृष्ण हैं, जो अपने दिव्य शरीर में आदि भगवान् हैं और समस्त कारणों के परम कारण हैं। मैं उन आदि भगवान गोविन्द की पूजा करता हूँ।

यस्यावतारकर्माणि गायन्ति ह्स्मदादयः।
न यं विदन्ति तत्त्वेन तस्मै भगवते नमः।।

हम उन पूर्ण पुरुषोत्तम को सादर नमस्कार करते हैं, जिनके अवतारों तथा कार्य-कलापों का गायन हमारे द्वारा उनके महिमा-मण्डन के लिए किया जाता है, निस्सन्देह वे अपने शत-प्रतिशत उसी रूप में ही ज्ञात हो सकते हैं।

आद्योऽवतारः पुरुषः परस्य
कालः स्वभावः सदसन्मनश्च।
द्रव्यं विकारो गुण इन्द्रियाणि
विराट् स्वराट् स्थास्त्रु चरिष्णु भूम्नः।।

करणार्णवशायी विष्णु ही परमेश्वर के प्रथम अवतार हैं। वे सनातन काल, आकाश, कार्य-कारण, मन, तत्त्वों, भौतिक अहंकार, प्रकृति के गुणों, इन्द्रियों, भगवान् के पूर्ण शरीर, गर्भोदकशायी विष्णु तथा समस्त चर एवं अँचर जीवों के स्वामी हैं।

तथापि नाथमानस्य नाथ नाथय नाथितम्।
परावरे यथा रूपे जानीयां ते त्वरूपिणः।।

फिर भी है भगवान्, मेरी आपसे प्रार्थना है कि मुझे इच्छित प्रदान करें। कृपया मुझे बताएँ कि आप निराकार होते हुए भी आप संसारी रूप किस प्रकार धारण करते हैं।

ब्रह्म संहिता

एकोऽप्यसौ रचयितुं जगदंडकोटिं
यच्छक्तिरस्ति जगदंडचया यदन्तः।
अण्डान्तरस्थ परमाणुचयान्तरस्थं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की सेवा करता हूँ, जो अपने एक अंश के द्वारा समस्त ब्रह्मांड और समस्त परमाणु में प्रविष्ट होते हैं और इस तरह समय सृष्टि भर वे अपनी अनन्त शक्ति का असिम प्रकट करते हैं।

प्रेमांजनच्छुरितभक्तिविलोचनेन
सन्तः सदैव हृदयेषु विलोकयन्ति।
यं श्यामसुन्दरमचिन्त्यगुणस्वरूपं
गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

मैं उन आदि भगवान् गोविन्द की पूजा करता हूँ, जिनका दर्शन शुद्ध भक्त अपनी आँखों में भगवद्-प्रेम रूपी अंजन पहनकर सदैव अपने हृदयों के भीतर करते हैं। यह गोविन्द समस्त दिव्य गुणों से पूर्ण श्यामसुन्दर स्वरूप हैं।

स्कन्द पुराण

संसारेऽस्मिन् महाघोरे जन्ममृत्युसमाकुले।
पूजनं वासुदेवस्य तारकं वादिभिः स्मृतम्।।

यह संसार अन्धकार और भय के साथ-साथ जन्म-मृत्यु तथा अनेक प्रकार के चिन्ताओं से परिपूर्ण है और इस विशालतम मायाजाल से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय भगवान् वासुदेव की दिव्य प्रेमभक्ति को ग्रहण करना है। सभी वर्ग के दार्शनिकों ने इसे स्वीकार किया है।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
नूनं सम्पूर्णतामेति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

मैं अच्युत भगवान् को सादर नमस्कार करता हूँ, क्योंकि केवल उनके पवित्र नाम के स्मरण या उच्चारण से सभी प्रकार के तपों, सकाम कर्मों, यज्ञों का फल की प्राप्ति होती है और इस विधि का सर्वत पालन किया जा सकता है।

अर्चिते देवदेवेशे शंखचक्रगदाधरे।
अर्चिताः सर्वदेवाः स्युर्यतः सर्वगतो हरिः।।

मैं उन आदि भगवान् गोविन्द को पूजा करता हूँ, जो शंख, चक्र, गदा तथा पद्मधारी है और जब उनकी पूजा की जाती है, तो अन्य समस्त देवों की पूजन स्वतः हो जाती है, क्योंकि श्रीभगवान् हरि सर्वव्यापी है।

श्रीशुक उवाच

एतन्निर्विद्यमानानामिच्छतामकुतोभयम्।
योगिनां नृप निर्णीतं हरेर्नामानुकीर्तनम्।।

हे प्रभु! अन्ततः यह निश्चित् हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति को, चाहे वह संन्यासी हो, योगी हो अथवा सकाम कर्मी हो, वांछित फल की प्राप्ति हेतु निर्भयता से भगवान् के पवित्र नाम का जप करना चाहिए।

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्रीमती अंजना अग्रवाल स्टेशन रोड, पाली रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार	**सुश्री सुमन चमड़िया** आम्रपाली मार्केट, डेहरी ऑन-सोन, बिहार	**श्रीमती श्रुती चमड़िया** आम्रपाली मार्केट, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अतुल डालमिया** न्यु सिंधौली, डालमिया नगर डेहरी ऑन-सोन, बिहार	**श्रीमती तुलीका हजारिका** स्टेशन रोड, डालमिया नगर डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार
श्री आभा तुलस्यान मे. तुलस्यान कम्प्युटर सिनेमा रोड, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार	**श्री राजेश तुलस्यान** मे. तुलस्यान कम्प्युटर सिनेमा रोड, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार	**श्रीमती रश्मि अग्रवाल** स्टेशन रोड, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार	**श्रीमती नेहा हजारिका** स्टेशन रोड, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार	**श्रीमती रोली हजारिका** स्टेशन रोड, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, बिहार
श्री वासुदेव हजारिका स्टेशन रोड, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार	**श्री संजय कुमार रूँगटा** नील कोठी, डेहरी ऑन-सोन रोहतास, बिहार	**श्रीमती अंजना देवी** नील कोठी, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री राहुल कुमार चौधरी** सुभाष नगर, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अशोक कुमार रूँगटा** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्रीमती उषा देवी स्टेशन रोड, शारदा बिल्डिंग डालमिया नगर, रोहतास, बिहार	**श्रीमती लक्ष्मी देवी** सुभाष नगर, वार्ड नं.-१५ डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री मनोज कुमार अग्रवाल** सुभाषनगर, वार्ड नं-१५ डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री सुनील कुमार भीमसरीया** स्टेशन रोड, शारदा बिल्डिंग डालमिया नगर, रोहतास, बिहार	**श्री शिव कुमार अग्रवाल** मे. प्रसाधन, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्रीमती सुनिता अग्रवाल मे. प्रसाधन, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अंकुर अग्रवाल** मे. प्रसाधन, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती सपना अग्रवाल** मे. प्रसाधन, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीकांत अग्रवाल** झंवरमल गली, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती नीलम अग्रवाल** झंवरमल गली, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्री प्रभु प्रताप अग्रवाल मे. सुख साधन, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री प्ररेन अग्रवाल** मे. सुख साधन, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अमित रूँगटा** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती रितु हजारिका** स्टेशन रोड, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती सुमन अग्रवाल** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्री अमित हजारिका स्टेशन रोड, डालमिया नगर डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री शंकर लाल अग्रवाल** सुभाष नगर, पाली रोड डालमिया नगर, रोहतास, बिहार	**श्रीमती ललिता देवी** सुभाष चौक, पाली रोड डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अजय मिश्रा** गली नं.-४, पानी टंकी डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती शारदा देवी शर्मा** टाईप-३, ७६, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्रीमती किशोरी शर्मा टाईप-ए, ७६, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री भगवत शर्मा** डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री राज कुमार शर्मा** टाईप-डी, ७६, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, बिहार	**श्रीमती मनीषा शर्मा** डालमिया नगर डेहरी ऑन-सोन, रोहतास बिहार	**श्रीमती मीनाक्षी शर्मा** डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्री निर्मल कुमार भालोटिया नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री लाली भालोटिया** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री सुरज भालोटिया** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती रेणु कुमार भालोटिया** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती तुलसी भालोटिया** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्रीमती लक्ष्मी शर्मा बंगाली मोहल्ला, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती लता मिश्रा** गली नं.-४, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती पुजा शर्मा** मे. नारायण स्वीट्स पाली डेहरी ऑन-सोन, बिहार	**श्री हरिश चमड़िया** आम्रपाली मार्केट, न्यु दिल्ली डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री राकेश कुमार बोहरा** मे. जे.बी.एल आयल एण्ड फ्रूट्स, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्री दीपक कुमार गाड़ोदिया राजभोग भवन, राजभोग गली, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री मोहन अरुकिया** गुरूद्वारा गली, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती रूपा अरुकिया** गुरूद्वारा, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती कुसुम देवी** पाली रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अजीत सुल्तानियाँ** मेहरा कैम्पस, पाली रोड, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्री अमित सुल्तानियाँ मेहरा कैम्पस, पाली रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती रूबी सुल्तानियाँ** मेहरा कैम्पस, पाली रोड, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती पदमा देवी** जरावी बिघा, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री मोहित अग्रवाल** कैनल रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री रामनाथ अग्रवाल** जरावी बिघा, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्री दीप सिखा अग्रवाल कैनल रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास बिहार	**श्री अशोक कुमार अग्रवाल** कैनल रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास बिहार	**श्रीमती सुनीता अग्रवाल** कैनल रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास बिहार	**श्रीमती किरण केजरीवाल** मे. सहेली, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री सरोज केजरीवाल** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्री उमंग अग्रवाल न्यु दिलीया, डेहरी ऑन-सोन रोहतास, बिहार	**श्री गोविन्द कुमार झुनझुनवाला** डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती वीना अग्रवाल** स्टेशन रोड, पाली मोड़ डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती सिप्रा चमड़िया** आम्रपली मार्केट, न्यु दिलीया डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री पवन कुमार शर्मा** मे. न्यु राज भोग, पी.एन.बी. के नजदीक, डालमिया नगर, बिहार
श्री उत्सव अग्रवाल न्यु दिलीया, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती जानकी देवी** गुरुद्वारा गली, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती नीतु कन्दोई** डागा पार्क, पाली रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती माया देवी बोहरा** पानी टंकी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री नवल किशोर बोहरा** पानी टंकी, डेहरी ऑन-सोन रोहतास, बिहार
श्री राकेश बोहरा पानी टंकी, डेहरी ऑन-सोन रोहतास, बिहार	**श्रीमती मधु देवी बोहरा** पानी टंकी, डेहरी ऑन-सोन रोहतास, बिहार	**श्रीमती रूपा अरुकिया** गुरुद्वारा गली, नील कोठी डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री मोहन अरुकिया** गुरुद्वारा गली, नील कोठी डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री सोनु अग्रवाल** पाली रोड, डेहरी ऑन-सोन बिहार
सुश्री स्वाती अग्रवाल नील कोठी, वार्ड नं-३० डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती शालु अग्रवाल** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती मीणा अग्रवाल** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती नेहा गिन्दोरिया** स्टेशन रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती मीणा झुनझुनवाला** बड़ा पत्थर, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्री दीपक कुमार गिन्दोरिया स्टेशन रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री श्याम सुन्दर गिंदोरिया** स्टेशन रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री कुमार प्रतीक** ईदगाह मोहल्ला, वार्ड नं.- २२, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री कुमार सानु** ईदगाह मोहल्ला, वार्ड नं.- २२, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती सुनीता रुँगटा** नील कोठी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्रीमती अंजली भीमसरिया स्टेशन रोड, शारदा बिल्डिंग डालमिया नगर, बिहार	**श्री बिजय कुमार अग्रवाल** स्टेशन रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती द्रोपदी शर्मा** पाली रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अशोक कुमार शर्मा** पाली रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्री शशी भुषण शर्मा** मे. उत्सव सेलेब्रेशन सेन्टर पानी टंकी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्री रतन लाल शर्मा मे. राज इलेक्ट्रीक वर्क्स स्टेशन रोड, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती नीतु चमड़िया** मे. उत्सव सेलेब्रेशन सेन्टर पानी टंकी, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती उषा सुल्तानियाँ** द्वारा - सुभाष कुमार पाण्डेय पानी टंकी, डेहरी ऑन- सोन, बिहार	**श्री पवन सुल्तानियाँ** पानी टंकी, डेहरी ऑन- सोन, बिहार	**श्रीमती वीणा अग्रवाल** गुरुद्वारा गली, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार
श्री सतीश अग्रवाल गुरुद्वारा गली, डेहरी ऑन- सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती रीचा गोयनका** डी/३५, डालमिया नगर डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती प्राची मारोदिया** मे. रोहतास फर्नीचर नील कोठी, डेहरी ऑन-सोन, बिहार	**श्रीमती अल्का मारोदिया** मे. परिधान, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री अंशुल मारोदिया** मे. परिधान सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्रीमती विद्या देवी मे. रोहतास फर्नीचर, नील कोठी, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री सुनील कुमार मारोदिया** मे. परिधान, सिनेमा रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री किशन प्रसाद हजारिका** न्यु सिधौली, डालमिया नगर, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री विश्वनाथ प्रसाद झुनझुनवाला** डागा पार्क, पाली रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री बिजय कुमार अग्रवाल** पाली रोड, स्टेशन रोड डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार
श्रीमती शांती चमड़ीया पानी टंकी रोड, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्री सतीश चमड़िया** धनतोलिया मोहल्ला, डेहरी ऑन-सोन, रोहतास, बिहार	**श्रीमती मीना चमड़िया** पानी टंकी रोड, डेहरी ऑन-सोन, बिहार	**श्री संजय देवड़ा** नारायणी हाउस, नील कोठी डेहरी ऑन-सोन, बिहार	**श्रीमती सोनी शाह** नील कोठी, थाना चौक डेहरी ऑन-सोन, बिहार
श्रीमती गीता देवी डेहरी ऑन-सोन बिहार	**श्री अंकित कुमार पोद्दार** नवरतन बाजार सासाराम, बिहार	**श्री राजेश सिंघानियाँ** डेहरी ऑन-सोन बिहार	**श्रीमती पूजा सराफ** डेहरी ऑन-सोन बिहार	**श्री मनीष माथोगढ़ीया** मे. श्री श्याम स्टोर्स छोटा रमना, बेंतिया बिहार
श्री संजय जैन मे. बालाजी हार्डवेयर स्टोर लाल बाजार, बेंतिया बिहार	**श्री रमेश कुमार झुनझुनवाला** मे. बालाजी स्टील, तामर रोड, भागलपुर, बिहार	**श्री प्रमोद कुमार मोदी** मे. बासुदेव प्रमोद कुमार सुतापट्टी, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्रीमती अनिता कुमारी** ईमली पट्टी, मुजफ्फरपुर बिहार	**श्री किशोर कुमार मोरे** द्वारा - रामेश्वर प्रसाद मोरे सिकन्दरपुर, मुजफ्फरपुर, बिहार
श्री महेश कुमार अग्रवाल मे. प्रिमियर इंजनियरिंग कं. आमगोला, रमना, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्रीमती बरखा झुनझुनवाला** ५०४ए, साकेत प्लाजा जमाल रोड, पटना, बिहार	**श्री तन्मय ओजस्वी** २०१, कणिका महार अपार्टमेंट, कदमकुँआ, पटना, बिहार	**श्री राजेश कुमार** अख्तियारपुर हाउस तीसरा तल, कदमकुँआ पटना, बिहार	**श्रीमती दिप्ती मस्करा** १०३ एम, मोती मेन्शन अपार्टमेंट, कँकड़बाग, पटना, बिहार

सम्मेलन में नए सदस्यों का स्वागत!

आजीवन सदस्य

श्रीमती अनिता सुरेका १०७, एम्बीशन रेसीडेन्सी एक्जीबिशन रोड, पटना बिहार	**श्री रिशु कोठारी** ६०१, अभिषेक प्लाजा एक्जीबिशन रोड, पटना बिहार	**श्री नरेश कुमार मस्करा** १०३, मोती मेंशन अपार्टमेंट कँकड़बाग, पटना, बिहार	**श्री अंशुमन सुरेका** ५०९, आशियाना प्लाजा बुद्धमार्ग, पटना, बिहार	**श्री नीरज सरावगी** ४०१, दीप लीला अपार्टमेंट कदमकुँआ, पटना, बिहार
श्री कैलाश प्रसाद जालान शॉप नं.-२०६, नारायण प्लाजा, एक्जीबिशन रोड पटना, बिहार	**श्री सुनील कुमार कानोड़िया** ४सी, राजनेश्वर काम्पलेक्स लोहा सिंह लेन, कदमकुँआ पटना, बिहार	**श्री सौरभ अग्रवाल** ए/१०३, चारमिनार अपार्टमेंट, रोड नं.-१२, राजेन्द्र नगर, पटना, बिहार	**श्री नितीन जैन** ३०१, श्याम किशोरी अपार्टमेंट, फ्रेजर रोड, पटना, बिहार	**श्री लक्ष्य जैन** कश्यप विश्वमोहीनी काम्पलेक्स, कंकड़ बाग, मेन रोड, पटना, बिहार
श्री राहुल कुमार द्वारा - अहमदाबाद फैंसी स्टोर, अशोक राजपथ, पटना, बिहार	**श्री अमित कुमार मोदी** ३०२, छठधाम अपार्टमेंट पाटलीपुत्र पथ, पटना, बिहार	**श्री मनोज कुमार जैन** ६०२, दीपलीला काम्पलेक्स विंध्यावासिनी स्ट्रीट पटना, बिहार	**श्री पवन कुमार अग्रवाल** मे. संगम फर्नीशिंग एफ ९०, खेतान सुपर मार्केट, पटना, बिहार	**श्री राम बाबु अग्रवाल** ५०३, दीपमाला अपार्टमेंट विंध्यावासिनी स्ट्रीट, कदमकुँआ, बिहार
श्री मोहन कुमार मालू मे. भारत खादी स्टेशन रोड, रोसड़ा समस्तीपुर, बिहार	**श्री कृष्णा कुमार मालू** मे. भारत गारमेंट्स प्रथम तल, समस्तीपुर बिहार	**श्री शम्भु कुमार कानोड़िया** मे. कानोड़िया वस्त्रालय स्टेशन रोड, रोसड़ समस्तीपुर, बिहार	**श्री शुभम कुमार** धाव मोहल्ला, वार्ड नं-१३ रोसड़, समस्तीपुर, बिहार	**श्री आशुतोष लाखोटिया** महादेव मेंशन, स्टेशन रोड रोसड़, बिहार
श्री विजय कुमार अग्रवाल स्टेशन रोड, रोसड़ बिहार	**श्री मामराज अग्रवाल** गर्ल्स स्कुल के नजदीक रोसड़, समस्तीपुर, बिहार	**श्री राजेश कुमार खेमका** ब्लाक रोड, रोसड़ समस्तीपुर, बिहार	**श्री पंकज जाज़ोदिया** मे. ओम गारमेंटस धनश्याम पुरी मार्केट रोसड़, बिहार	**श्रीमती रश्मि जाजोदिया** मे. ओम गारमेंटस धनश्याम पुरी मार्केट, रोसड़, समस्तीपुर, बिहार
श्री अवि कुमार डालमिया शॉप नं.-०२, होटल युवराज बिल्डिंग, पटना, बिहार	**श्री पवन कुमार केडिया** मे. आर. के. सेल्स मोहिनी मार्केट, पटना, बिहार	**श्री सुर्याकान्त अग्रवाल** ए-४०१, बंसल टावर पटना, बिहार	**श्री सुर्यास सुन्दरका** बी-५०२, बंसल टावर पटना, बिहार	**श्री कन्हैया कुमार** मे. कन्हैया टेक्सटाईल्स बिड़ला मंदिर रोड, पटना बिहार
श्री अनिल कुमार अग्रवाल ४०३, दीपमाला अपार्टमेंट कदमकुँआ, पटना, बिहार	**श्रीमती सविता जालान** ४बी, दुर्गा विहार अपार्टमेंट एस.पी. वर्मा रोड, पटना बिहार	**श्रीमती नीलम कानोड़िया** फ्लैट नं.-५०२, योगेन्द्र पार्वती इंक्लेव, किदवईपुरी रोड, पटना, बिहार	**श्री नवनीत कुमार कानोड़िया** फ्लैट नं.-५०२, योगेन्द्र पार्वती इंक्लेव, किदवईपुरी रोड, पटना, बिहार	**श्री बिमल कुमार अग्रवाल** ८१०, आशियाना प्लाजा बुद्ध मार्ग, पटना, बिहार
श्री मनोज केजरीवाल फ्लैट नं.-३०३, शैल प्लाजा हरिका नाथ लेन, पटना, बिहार	**श्री दिलीप अग्रवाल** मे. सुभाष फैब्रिक्स टी-९९, खेतान सुपर मार्केट पटना, बिहार	**श्री रवि शंकर केडिया** रस्तोगी भवन, कदमकुँआ पटना, बिहार	**श्री सचिन कुमार हरलालका** मे. शाखु बलाजी खजांची रोड, पटना, बिहार	**श्री संजीव अग्रवाल** ४०८, दीपलीला अपार्टमेंट कदमकुँआ, पटना, बिहार
श्री कुमार अनंत सवेरा देवालय अपार्टमेंट पटना, बिहार	**श्री अमित चौधरी** द्वारा - हीरा नंद साह लेन चौक, पटना सिटी, बिहार	**श्री सतीश चन्द्र शर्मा** प्रसाद सदन फ्रेजर रोड, पटना, बिहार	**श्री सोनु बंका** फ्लैट नं.-८३ कावेरी अपार्टमेंट फ्रेजा रोड, पटना, बिहार	**श्री पियुष बंका** मे. शिव शक्ती टेक्सटाईल्स शांति मार्केट, सुतापट्टी बिहार
श्री अंजनी कुमार परवा टोली, आमगोला मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री शंकर कुमार नौलखा** इंद्र चंद्र वस्ती राम सुपौल, बिहार	**श्री छत्तर कुमार नौलखा** प्रतापगंज, सुपौल बिहार	**श्री जितेन्द्र सेठीया** मे. जितेन्द्र क्लाथ स्टोर प्रतापगंज, सुपौल, बिहार	**श्री गोविन्द कुमार टिबड़ेवाल** मे. माँ जानकी कम्युनीकेशन वार्ड नं.-१०, सीतामढ़ी, बिहार
श्री संजित कुमार मित्तल मे. अमन ऑटो एजेन्सी वार्ड नं.-११, पुपरी, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री चन्द्र भानु शर्मा** मे. शर्मा मोबाईल्स, पुपरी बाजार, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री अमर कुमार बाजोरिया** मे. जानकी ट्रेडर्स, पुपरी बाजार, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री विजय कुमार अग्रवाल** विद्यापति चौक, पुपरी बाजार, सीतामढ़ी, बिहार	**श्री रमेश कुमार जालान** मे. श्री अन्नपुर्णा ट्रेडर्स पुपरी बाजार, सीतामढ़ी बिहार
श्री भारत टेकरीवाल वार्ड नं.-२२, नागा रोड रक्सौल, बिहार	**श्री राजेश काबरा** मे. काबरा इंटरप्राईजेज बैंक रोड, रक्सौल, बिहार	**श्री गणेश पोद्दार** मे. सिद्धी साड़ी सेन्टर सुतापट्टी, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री रोहित कुमार** जुडान छपरा, रोड नं.-४ मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री विवेक कुमार गुप्ता** श्री खाटु श्याम रोड मुजफ्फरपुर, बिहार
श्री मनोज कुमार अग्रवाल श्री बनारसी लाल अग्रवाल दुर्गा स्थान, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री अशोक कुमार नेमानी** शिव कालोनी, पुरानी गुदड़ी मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री लक्ष्मण प्रसाद चाचण** मे. राधे सिंथेटिक्स कमला मार्केट, मुजफ्फरपुर, बिहार	**श्री प्रभु दयाल तुलस्यान** महावीर चौक, बनगांव रोड वार्ड नं.-२०, सहरसा, बिहार	**श्री विशाल खेतान** मे. मन्नु वस्त्रालय बलवा हाल्ट, सहरसा बिहार

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

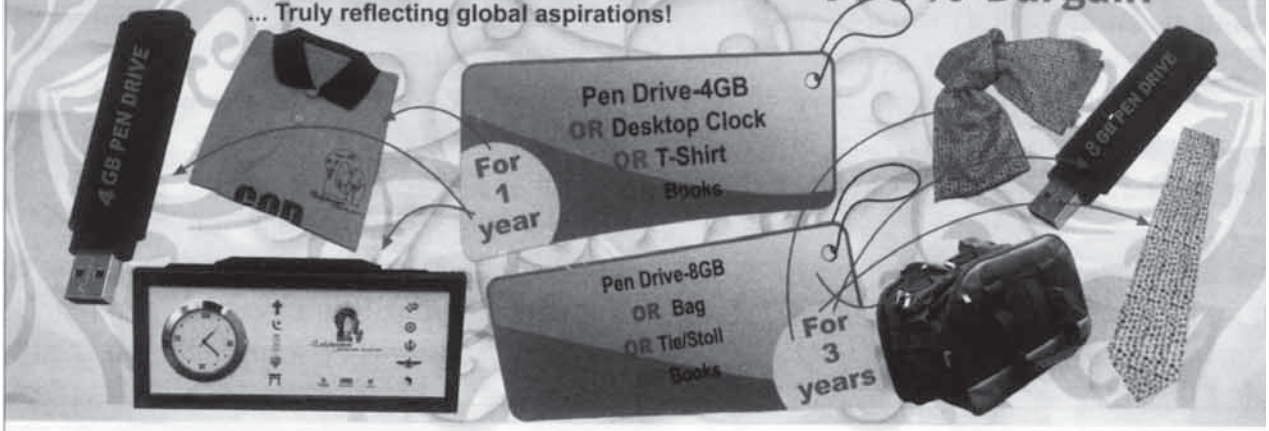

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐4GB Pen Drive OR☐ Desktop ClockOR☐ T-Shirt OR☐Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

CENTURYPLY®

CENTURYPLY® CENTURYLAMINATES® CENTURYVENEERS®

CENTURYPRELAM® CENTURYMDF® CENTURYDOORS™

zykron FIBRE CEMENT BOARDS & PLANKS

STARKE NEW AGE PANELS

SAINIK PLYWOOD HAMESHA TAIYYAR

For any queries, **SMS 'PLY'** to **54646** or call us on **1800-2000-440** or give a missed call on **080-1000-5555**

E-mail: **kolkata@centuryply.com** | CenturyPlyOfficial | CenturyPlyIndia | YouTube Centuryply1986 | Visit us: **www.centuryply.com**

TUBEROSE

Kolkata's leading stevedoring and shipping logistics company

Areas of expertise include -

MANAGEMENT OF PULSES

BARGING

STEVEDORING

SHORE AND PORT EQUIPMENTS

STEAMER AGENCY

VARIED LOGISTICS AND SHIPPING EXPERIENCE

TUBEROSE LOGISTICS PVT LTD | 3B CAMAC STREET | KOLKATA 700016 | 9830261566 / operations@tuberoselogistics.com

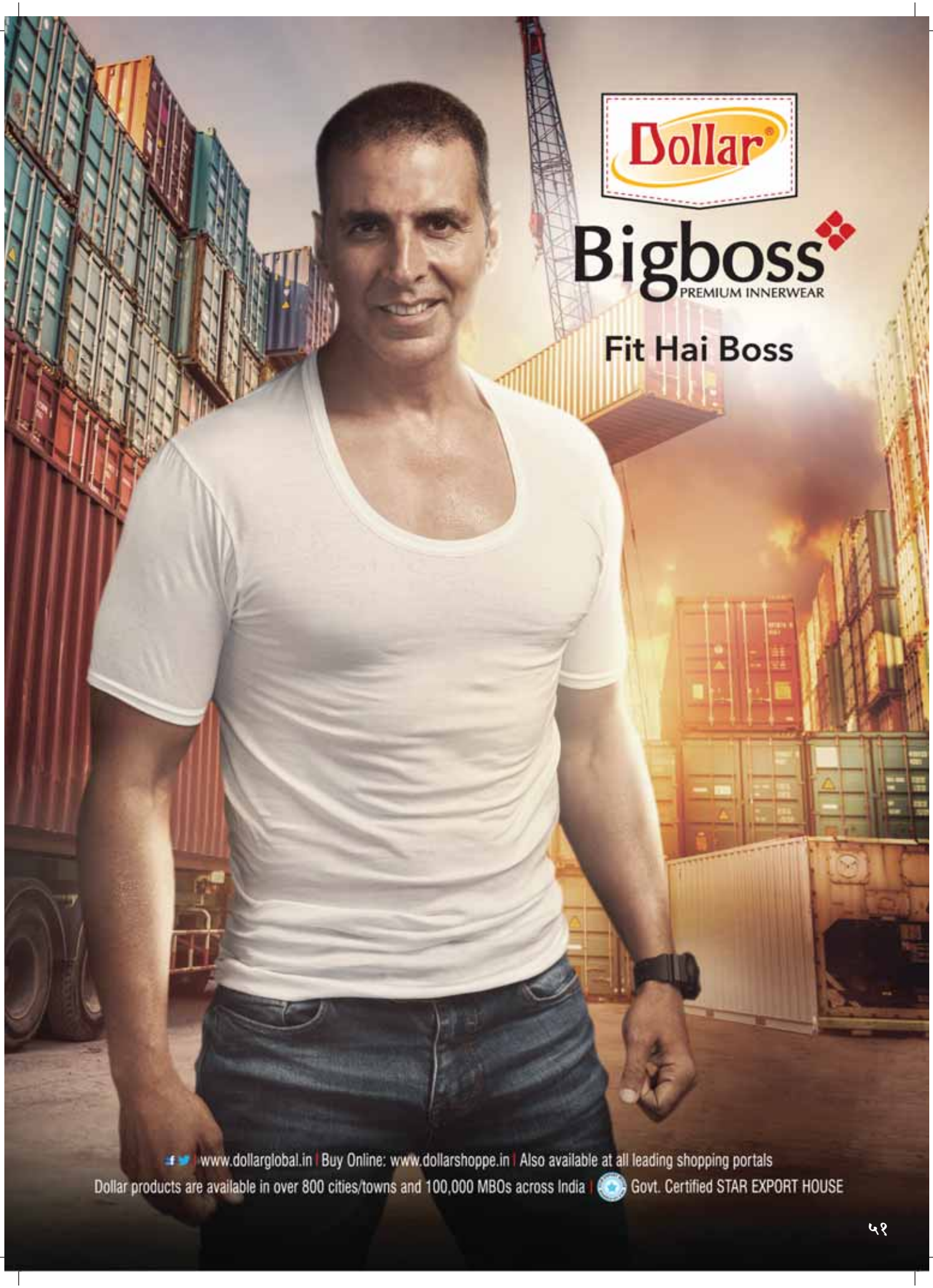
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2018-2020
Date of Publication - 30 September 2019
RNI Regd. No. 2866/1968

LIFE BEGINS AT 60!

JAGRITI DHAM

KOLKATA'S MOST COMPREHENSIVE HOME FOR SENIOR LIVING

Yoga & meditation

Wellness spa

Indoor games

Outdoor activities

COMFORTS & CONVENIENCES
- Furnished and fully-serviced AC rooms
- Attached toilet, pantry and balcony
- Housekeeping and maintenance on call
- Wi-fi, Intercom

Privilege access to IBIZA Club

24 x 7 Medical care

Mandir

Safety and Security

SENIOR-FRIENDLY
- Wheel chair and walker-enabled spaces and ramps
- Spacious lifts to accommodate stretchers
- Specially designed bathrooms with wheel chair-accessible showers

- Inside Merlin Greens complex
- Adjacent to Ibiza on Diamond Harbour Road
- Near Bharat Sevasram Hospital and Swaminarayan Dham Temple
- 5 kms from Nature Cure and Yoga Research Institute

SECURITY
- 24 hours manned gate with intercom
- Electronic surveillance, CCTV
- Power back-up

HEALTHCARE
- 24x7 ambulance, attendant
- Visiting doctors, specialists-on-call
- Emergency button in every room and frequently occupied areas
- Tie-ups with the city's best nursing homes and hospitals

SAFETY ACTIVITY COMMUNITY SPIRITUALITY

Supported by infinity

Jagriti Dham, Merlin Greens, IBIZA Club, Diamond Harbour Road, Pin 743 503
contact@jagritidham.com | www.jagritidham.com | 88 200 22022

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com